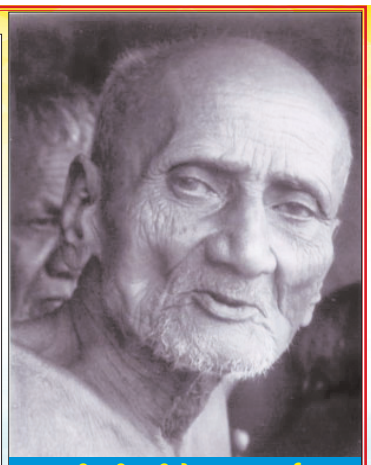
R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni777@gmail.com



बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

महासभा कार्यालय में संपन्न हुआ दीपावली पूजन
पृष्ठ 10 पर...

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

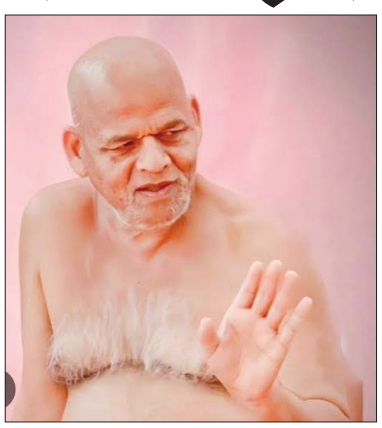
www.Jaingazette.com

वर्ष 33 अंक 02 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 16 नवम्बर 2026, वीर नि. संवत् 2553

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

भोपाल में लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला ने आचार्यश्री समय सागरजी महाराज से लिया आशीर्वाद





पुनीत जैन

भोपाल, 12 नवम्बर। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला एवं राजस्थान सरकार के ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर ने विद्योदय तीर्थ पहुंचकर आचार्य श्री समय सागर महाराज के दर्शन किए और उन्हें श्रीफल अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान उन्होंने तीर्थ स्थित प्रथम जिनालय के दर्शन भी किए। चातुर्मास समिति के प्रवक्ता सुनील जैनाविन ने बताया कि मुलाकात के दौरान लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने गौवंश को राष्ट्रीय पशु घोषित कराने के लिए हरसंभव प्रयास करने का भरोसा दिलाया। उन्होंने आचार्य श्री विद्यासागर महाराज द्वारा संचालित प्रकल्पों की सराहना करते हुए कहा कि गोसेवा, जीव दया, हथकरघा और प्रतिभास्थली जैसे कार्य भारत की संस्कृति एवं संस्कारों की अमूल्य धरोहर हैं। इस अवसर पर आचार्य श्री समय सागर महाराज ने कहा कि राष्ट्रहित सर्वोपरि होना चाहिए। सभी को मिलकर राष्ट्र के विकास और उत्थान के लिए प्रयास करना चाहिए, ताकि भारत पुनः सोने की चिड़िया बने और विश्व में अपना गौरवपूर्ण स्थान स्थापित करे।

कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश महामंत्री राहुल कोठारी, पंचायत कमेटी अध्यक्ष पंकज सुपारी, निर्वाण संयोजक राकेश, ओएसडी चातुर्मास संयोजक देवेंद्र रुचि, हुकुमचंद जैन, दयोदय महासंघ मंत्री राकेश जैन, अशोक सिंघई, विनोद चौधरी, अनुपम, राजकुमार कौशल, राजू सेठ, पंकज चाय, पंकज सीहोर, राजीव गेहूं, रौनक भैया सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। आयोजन की जानकारी सुनील जैना एवं अंशुल जैन ने दी।

THAILAND
9 DAYS TOUR
थाईलैंड जैन मंदिर
PHUKET, KARABI
BANGKOK, PATTAYA
Date : 20 Dec, 16 Dec, 8 Jan, 23 Jan

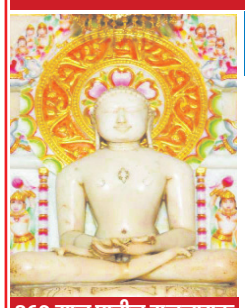
AUSTRALIA
10 DAYS TOUR
आस्ट्रेलिया जैन मंदिर
MELBOURNE
SYDNEY, GELIDAEY, GOLD COAST
Date : 1 Dec, 14 Dec, 18 Jan, 13 Feb

JAPAN
8 DAYS TOUR
जापान जैन मंदिर
TOKYO, OSAKA
MT FUJI, HIROSHIMA, BULLET TRAIN
Date : 14 Nov, 2 Dec, 20 Jan, 14 Feb

SRILANKA
7 DAYS TOUR
श्रीलंका जैन मंदिर
COLOMBO, KANDY
BENTOTA, NUWARAELIYA
Date : 28 Dec, 18 Dec, 5 Jan, 25 Jan

Vayudoot
World Travels India Pvt. Ltd.
100% Pure Vegetarian Jain Food
हमारे यहाँ जैन भोजन की व्यवस्था
Mob : +91 9313382256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर



869 साल प्राचीन मूलनायक
श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण

LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM

@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री)
9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष)
095880-20330

नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

JK MASALE
SINCE 1995



– Breakfast Matlab –
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

Buy online on
jkcart.com

जैन धर्म का प्राचीन व प्रमाणिक नव वर्ष वीर निर्वाण वर्ष 2553 का हुआ आगाज

11 नवम्बर। फागी कस्बे में विराजमान आर्यिका श्रुतमति माताजी, आर्यिका सुबोधमति माताजी ससंघ धर्म की भव्य प्रभावना बढ़ा रही हैं। कार्यक्रम में आज प्रातः श्री जी के अभिषेक शांतिधारा एवं अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना करने के बाद आर्यिका श्री ने बताया कि जैन धर्म का प्राचीन व प्रमाणिक नव वर्ष वीर निर्वाण वर्ष 2553 कार्तिक शुक्ला एकम से शुरू हो गया है जो आपके लिए मंगलमय हो जिसका समग्र जैन समाज ने हर्षोल्लास पूर्वक स्वागत किया। कार्यक्रम में पार्श्वनाथ चैत्यालय में विराजमान आर्यिका श्रुतमति माताजी ने बताया कि जैन पंचांग के अनुसार इस वर्ष कार्तिक अमावस्या 8 और 9 नवंबर 2 दिन होने के कारण उसका निराकरण करते हुए अन्य आचार्यों ने 9 नवम्बर को निर्वाण का लाडू चढ़ाने और 10 नवम्बर से 2553 वां वीर निर्वाण संवत प्रारंभ होने का मार्ग प्रशस्त किया और 10 नवम्बर 2026 से 2553 वां वीर निर्वाण



संवत का भव्य आगाज हो गया। कार्यक्रम में बताया कि दीपावली कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन लगभग 527 ईसा पूर्व इसी रात को बिहार के पावापुरी में 72 वर्ष की आयु में भगवान महावीर को निर्वाण मोक्ष प्राप्त हुआ था। आर्यिका श्री ने बताया कार्तिक कृष्णा अमावस्या को पूर्व आचार्यों ने मोक्ष प्राप्ति, आध्यात्मिक प्रकाश और नए कालचक्र के आरम्भ के रूप में बताया है, जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर के निर्वाण के इस पावन दिन पर प्राचीन आचार्यों ने ऐतिहासिक गणनाओं के साथ-साथ गहन अध्यात्मिक संदेश भी दिए हैं। आचार्यों का संदेश है कि निर्वाण दिवस केवल उत्सव नहीं बल्कि अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को जीवन में उतारने का संकल्प दिवस है, आचार्यों ने इस दिन को भौतिक संपत्ति (लक्ष्मी वैभव) की जगह आध्यात्मिक उन्नति और वैराग्य लक्ष्मी की आराधना पर जोर दिया। निर्वाण दिवस जैन धर्म का सबसे पवित्र और महत्वपूर्ण पर्व है, जो भगवान महावीर के मोक्ष निर्वाण प्राप्ति की स्मृति में मनाया जाता है, आर्यिका श्री ने बताया कि पूर्वाचार्यों के अनुसार इस दिन भगवान महावीर के निर्वाण के साथ ही उनके प्रमुख शिष्य गौतम स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी, इसलिए संतों ने आतिशबाजी के स्थान पर अपने भीतर के अज्ञान रूपी अन्धकार को मिटाकर सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह के दीपक जलाने का आह्वान किया था, राजस्थान जैन सभा शाखा फागी के महामंत्री राजाबाबू गोधा ने बताया कि आर्यिका श्री ने सभी श्रद्धालुओं को प्रेरणा दी कि भगवान महावीर के आदर्शों को अपने जीवन में उतारना निर्वाण दिवस मनाने की सच्ची सार्थकता है, अतः जीवन को संयम और ज्ञान के प्रकाश ज्योतिर्मय बनाकर जीना चाहिये। कार्यक्रम अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा एवं सरावगी समाज के अध्यक्ष महावीर अजमेरा ने बताया कि आज कस्बे के सभी जिनालयों में जैन धर्म के नवें तीर्थंकर पुष्पदंत भगवान का सामूहिक रूप से जयकारों के साथ ज्ञान कल्याण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम मंदिर समिति के मंत्री कमलेश चौधरी ने बताया कि 15 नवम्बर को जैन धर्म के 22 वें तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान का गर्भ कल्याणक महोत्सव भक्ति भाव से मनाया जाएगा। इस मौके पर सभी जिनालयों में प्रातः पूजा अर्चना के विशेष आयोजन आयोजित किए जाएंगे।

अजमेर संभाग में भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस मनाया

राजाबाबू गोधा, फागी संवाददाता

9 नवम्बर। अजमेर संभाग में जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर का 2553 वां निर्वाणोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के संभाग महामंत्री कमल गंगवाल व संभाग संयोजक संजय कुमार जैन ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी का 2553वां निर्वाण दिवस पूरे देश के साथ-साथ अजमेर संभाग में भी बड़े धूमधाम, हर्षोल्लास एवं भक्ति भाव से मनाया गया, इस अवसर पर अजमेर संभाग के सभी मंदिर जी,



नसिया जी एवं तीर्थ स्थलों पर श्रीजी का नित्य नियम अभिषेक, शांतिधारा एवं पूजन किया गया। सभी मंदिरों, नसिया जी एवं तीर्थ स्थलों पर विशेष रोशनी और सजावट भी की गई। कार्यक्रम में गंगवाल ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी की विशेष पूजा अर्चना करने के बाद निर्वाण काण्ड का पाठ पढ़ा गया और इसके बाद सभी श्रद्धालुओं ने भगवान महावीर स्वामी के श्रीचरणों में सामूहिक रूप से जयकारों के साथ निर्वाण मोदक (लड्डू) समर्पित कर पुण्य का संचय कर सुख समृद्धि और खुशहाली की कामना की।
कार्यक्रम के संयोजक संजय जैन ने बताया कि इसके बाद गौतम गणधर स्वामी की विशेष पूजा-अर्चना भी की गई, रात्रि में 1008 दीपकों से महाआरती की गई और सभी जिनालय रोशनी से जगमगा उठे, कार्यक्रम के बाद सभी धर्मावलंबियों ने एक-दूसरे को दीपावली पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

जयपुर शहर के जनकपुरी में हुआ जैन नववर्ष 2553 का भव्य मंगलारंभ

राजाबाबू गोधा, फागी, संवाददाता



10 नवम्बर, जयपुर (जनकपुरी)। जैन समाज का जैन नववर्ष एवं वीर निर्वाण संवत् 2553 का पावन शुभारंभ जनकपुरी के लिए आध्यात्मिक उल्लास एवं पुण्यलाभ का विशेष अवसर लेकर आया, कार्यक्रम में मंदिर समिति के अध्यक्ष पदम बिलाला ने बताया कि परम पूज्य आचार्य श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज का मंगल सान्निध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त कर परिवार स्वयं को धन्य अनुभव कर रहे हैं, इस पावन अवसर पर पदम जैन बिलाला परिवार के अलावा सुनील जैन सेठी, राकेश जैन दूरदर्शन, सोभाग अजमेरा, अनिता बिंदायक्या, जिनेंद्र जैन श्रीमाल, ज्ञान चंद भोंच, महावीर कीर्ति नगर, कांता पाटनी, ललित गोधा आदि परिवार ने आचार्य श्री आदित्य सागर जी को नवधा भक्ति पूर्वक आहारदान कराने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। जैन दर्शन में आहारदान को मुनिराजों की साधना के प्रति विनय, भक्ति एवं श्रावक के उत्कृष्ट कर्तव्य का प्रतीक माना गया है। आचार्य श्री के चरणों में श्रद्धापूर्वक नमोस्तु निवेदित कर पदम जैन बिलाला परिवार के पारस बिलाला, पहुप, दीपिका जैन, आदि श्री, आदिश, आदित, आदिवा परिवारजनों ने मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। नववर्ष के प्रथम दिवस पर गुरु-वंदना, साधु सेवा एवं आहारदान के पुण्ययोग ने इस अवसर को परिवार के लिए चिरस्मरणीय बना दिया। नव वर्ष पर सभी ने एक दूसरे का अभिनंदन किया।

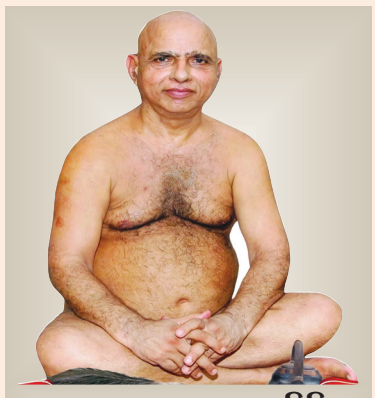
गायत्री नगर में महावीर स्वामी निर्वाण महोत्सव

9 नवम्बर। जैन धर्म के वर्तमान जैन चौबीसी के 24वें तीर्थंकर अहिंसा धर्म के प्रणेता, विश्ववंदनीय भगवान महावीर स्वामी का 2553 वाँ निर्वाण (मोक्ष) महोत्सव जयपुर महानगर के सभी जिनालओं में 9 नवंबर को प्रातः बड़े ही धूमधाम से मनाया गया, जिसके अंतर्गत श्री दिगंबर जैन मंदिर गायत्री नगर, महारानी पुर्म, जयपुर में मन्दिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष अरुण शाह के नेतृत्व में दो सत्रों में निर्वाण लाडू बड़े ही भक्ति भाव के साथ समर्पित किया गया।
कायक्रम में जैन समाज के प्रचार - प्रसार समिति के संयोजक उदयभान जैन बडजात्या ने अवगत कराया कि उक्त निर्वाण महोत्सव गायत्री नगर जयपुर मंदिर प्रबन्ध समिति के तत्वावधान में विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ मनाया गया, प्रातः अभिषेक, शांति धारा के पश्चात सामूहिक पूजन, निर्वाण काण्ड बोल कर 7:30 बजे प्रथम सत्र में निर्वाण लाडू चढ़ाने का सौभाग्य लाजपत- सरोज जैन, डॉ. ललित-कृपा मानस, हर्ष जैन रघुविहार परिवार को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात द्वितीय सत्र प्रातः 8:30 बजे निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। सभी मांगलिक क्रियाएं विधानाचार्य पंडित अजीत शास्त्री गायत्री नगर द्वारा संपन्न कराई गई, इस अवसर पर संपूर्ण जैन समाज के श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़-



चढ़कर भाग लिया और सभी ने जयकारों के साथ सामूहिक रूप से लाडू समर्पित कर सुख समृद्धि और खुशहाली की कामना की। कार्यक्रम में मंदिर प्रबन्ध समिति ने इस अवसर पर प्रथम अभिषेककर्ता, शांतिधारा व निर्वाण लाडू चढ़ाने वाले लाजपत जैन शिखरजी वाले परिवार का सम्मान किया गया। सायंकाल सामूहिक आरती दीप अर्चना का कार्यक्रम बड़े उल्लास व उत्साह के साथ संपन्न हुआ। मंदिर प्रबंध समिति के मंत्री राजेश बोहरा व संजय ठेलिया ने सभी का आभार व्यक्त किया।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
डायनामिक इंजीनियर्स प्रा. लि.
28, बैरकपुर ट्रन्क रोड
कोलकाता- 700002 'प.बं.'
फोन : 25577534



परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में शत् शत् नमन्

आचार्य वर्धमान सागर वचन

बीसवीं सदी के मुनिकुंजर ज्येष्ठाचार्य आदिसागर जी (अंकलीकर) के चतुर्थ पट्टाधीश, प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती, महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चरित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन, वंदन।

"समय पर समय देने वाला व्यक्ति समय पर मिल जाए तो समय को अच्छा होने में समय नहीं लगता"

-: नमनकर्ता :-

सुधान्शु कासलीवाल, अध्यक्ष श्री महावीरजी	धर्मचंद पहाड़िया, कार्याध्यक्ष प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, जयपुर	.....	.....
राजेन्द्र कटारिया, अहमदाबाद	सुरेश सबलावत, रेडी प्रिंट, जयपुर	.....	.....
पद्मचंद महेन्द्र कुमार धाकड़ा, चेन्नई	प्रदीप चूड़ीवाल, निखार, जयपुर	.....	.....
एम. के. जैन सरिता जैन, चेन्नई		.....	.....
महावीर बोहरा, आनंदपुर कालू		.....	.....

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711



सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

भट्टारक जी की नसियां में जयपुर में उपाध्याय उर्जयन्त सागर मुनिराज के सानिध्य में भगवान महावीर का मनाया 2553 वां निर्वाणोत्सव

भगवान महावीर संसार रूपी जेल से मुक्त हुए थे इसलिए निर्वाण उत्सव मनाया जाता है : उपाध्याय उर्जयन्त सागर महाराज

राजाबाबू गोधा, फागी संवाददाता

जयपुर, 9 नवम्बर। जैन धर्मावलंबियों द्वारा विश्व वन्दनीय, अहिंसा धर्म के प्रणेता जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर का 2553 वां निर्वाणोत्सव सोमवार, 9 नवम्बर को पूरे विश्व में भक्ति भाव से मनाया गया। इस मौके पर राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर की भट्टारक जी की नसियां में राजस्थान जैन सभा जयपुर के तत्वावधान में मुख्य आयोजन किया गया, कार्यक्रम में इससे पूर्व प्रातः शहर के 250 से अधिक दिगम्बर जैन मंदिरों में पूजा अर्चना के विशेष आयोजन हुए, भट्टारक जी की नसियां में उपाध्याय उर्जयन्त सागर महाराज के सानिध्य, राजस्थान जैन सभा जयपुर के अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन एवं महामंत्री मनीष बैद के नेतृत्व में आयोजित निर्वाण लाडू महोत्सव में डॉ. विमल कुमार जैन के निर्देशन में भगवान महावीर की अष्ट द्रव्य से संगीतमय पूजा अर्चना की गई। कार्यक्रम संयोजक एवं प्रसिद्ध गायक जिनेन्द्र जैन जीतू एवं गायिका बबीता जैन ने भजनों की प्रस्तुति दी। जयकारों के बीच निर्वाण लाडू चढ़ाकर सुख समृद्धि और खुशहाली की कामना की गई। कार्यक्रम सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रदीप जैन एवं उपाध्यक्ष विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि महोत्सव में समाज श्रेष्ठी जी सी





जैन - विशल्या देवी जैन ने मुख्य निर्वाण लाडू अर्पित किया तथा कार्यक्रम में जयपुर शहर के यशस्वी महापौर सुनील कोठारी समारोह गौरव के रुप में शामिल हुए। समाजश्रेष्ठी आर्किटेक्ट रीजनल काऊंसिल एशिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष तुषार सोगानी ने भगवान महावीर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया। समाज श्रेष्ठी अशोक - शकुन्तला, अंकित चांदवाड़ ने उपाध्याय श्री उर्जयन्त सागर मुनिराज के पाद प्रक्षालन पश्चात शास्त्र भेंट किया। समाजश्रेष्ठी भूपेन्द्र - अनिता ठेलिया, विजय विराट दीवान, अनुराग-कीर्ति पाटनी एवं वैद्यराज फूल चन्द - मनोरमा देवी जैन विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए। राजस्थान जैन सभा की ओर से पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया, इस मौके पर आर्किटेक्ट रीजनल काऊंसिल एशिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष तुषार सोगानी एवं वैद्यराज फूल चन्द जैन का समाज के प्रति उल्लेखनीय योगदान के लिए सभा की ओर से प्रशस्ति भेंट कर सम्मानित किया गया। महोत्सव में कार्यक्रम में उपाध्याय उर्जयन्त सागर महाराज ने अपने मंगलमय उदबोधन में भगवान महावीर के सिद्धांतों एवं शिक्षाओं पर प्रकाश डालते हुए निर्वाण लाडू उत्सव मनाने का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर संसार रुपी जेल से मुक्त हुए थे इसलिए निर्वाण उत्सव मनाया जाता है। पुण्य पंच परमेष्ठी की आराधना एवं भगवान की भक्ति करने से प्राप्त होता है। इससे पूर्व सौम्या जैन ने ''महावीर कहो महावीर सुनो....'' मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। मुख्य संयोजक अशोक जैन नेता ने बताया कि इस आयोजन में दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी की अखण्ड ज्योति की जोत से भगवान महावीर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया गया। संयोजक जिनेन्द्र जैन जीतू एवं एडवोकेट राजेश काला के मुताबिक महोत्सव में 'महावीर' नाम के श्रावकों को पूजा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, कार्यक्रम में मंत्री यशकमल अजमेरा ने बताया कि 108 दीपकों से भगवान महावीर की महाआरती के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ, इस मौके पर सभा के अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रदीप जैन, उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा, महामंत्री मनीष बैद, मंत्री यशकमल अजमेरा, संयुक्त मंत्री आर के जैन रेल्वे, कार्यक्रम मुख्य संयोजक अशोक जैन नेता, संयोजक जिनेन्द्र जैन जीतू, एडवोकेट राजेश काला सहित राजस्थान जैन सभा जयपुर के कार्यकारिणी सदस्य एवं दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के पूर्व अध्यक्ष जस्टिस एन के जैन, महेश काला, वैद्य अशोक गोधा, जय कुमार जैन कोटा वाले, डॉ. पी. सी. जैन सहित अन्य गणमान्य श्रेष्ठीजनों तथा श्रद्धालुओं ने सहभागिता निभाई। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन महामंत्री मनीष बैद ने किया तथा आभार उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा ने व्यक्त किया। अन्त में समाज बन्धुओं का सामूहिक वात्सल्य सहभोज हुआ।

आचार्यश्री प्रज्ञासागर जी ससंघ के पावन सानिध्य में गोलोक धाम चाकसू में होगा जैन विचारकों का महासम्मेलन 29 नवंबर को

महावीर स्वामी शासन काल में राजा श्रेणिक अब तक के सबसे बड़े पत्रकार : आचार्य प्रज्ञा सागर जी

राजाबाबू गोधा, फागी संवाददाता

जयपुर, 6 नवम्बर 2026। परम पूज्य आचार्य श्री प्रज्ञासागर जी महाराज ससंघ का पावन चातुर्मास गोलोक धाम चाकसू, जयपुर में भव्यता के साथ हर्षोल्लास पूर्वक चल रहा है, कार्यक्रम में चातुर्मास स्थापना से अब तक पूज्य आचार्य श्री के सानिध्य में विभिन्न धार्मिक एवं ऐतिहासिक आयोजन संपन्न हो चुके हैं और अनवरतक्रम जारी हैं। 3 नवम्बर 2026 को जैन समाज के वैचारिक राष्ट्रीय संगठन का प्रतिनिधि मंडल जैन महासंघ के यशस्वी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश जैन तिजारिया के नेतृत्व में गोलोक धाम चाकसू गया जहां पर प्रतिनिधि मंडल ने नव निर्मित गौशाला का अवलोकन करने के बाद आचार्य श्री के दर्शन कर





मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम में महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने अवगत कराया कि इस अवसर पर आचार्य श्री ने सभी आगंतुकों को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान महावीर स्वामी के शासनकाल में साठ हजार प्रश्न पूछने वाले राजा श्रेणिक अब तक के सबसे बड़े पत्रकार हुए हैं, जैन पत्रकारिता में सत्य, निष्पक्षता और धर्म प्रवर्तक विचारधारा की मजबूती हेतु श्री महावीर तपोभूमि परिवार उज्जैन द्वारा प्रदत्त राजा श्रेणिक जैन पत्रकारिता पुरस्कार 2026 दैनिक समाचार जगत के संपादक शैलेंद्र गोधा जयपुर को गोलोक धाम में जैन पत्रकार महासंघ के तत्वावधान में आयोजित पत्रकार महासम्मेलन 29 नवंबर को प्रदान किया जाएगा। गत् वर्ष 2025 में दैनिक विश्व परिवार के संपादक प्रदीप जैन रायपुर, छत्तीसगढ़ को शिक्षा नगरी कोटा में यह पुरस्कार प्रदान किया गया था, इस क्रम में जैन पत्रकार महासंघ की कार्यकारिणी व विशेष आमंत्रित सदस्यों की मीटिंग भट्टारक जी की नसिया जयपुर में 5 नवंबर को वरिष्ठ पत्रकार बलवंत राज मेहता की अध्यक्षता में रखी गई, जिसमें निर्णय लिया गया कि उक्त पत्रकार सम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में सम्पूर्ण भारतवर्ष के पत्रकार, लेखक, विद्वान एकत्रित हों। उक्त महासम्मेलन में वैचारिक गोष्ठी भी आयोजित की गई है। कार्यक्रम को गति प्रदान करने के लिए राकेश जैन चपलमन कोटा मुख्य संयोजक, दीपक गोधा, मनोज जैन, सुरेंद्र कुमार बड़जात्या जयपुर संयोजक मनोनीत किये गये हैं। कार्यक्रम के आयोजक चातुर्मास समिति के अध्यक्ष अनिल कुमार जैन बनेठा वाले, महामंत्री पारस जैन बाकलीवाल निमोडिया वाले, राजीव जैन गाजियाबाद, प्रकाश बाकलीवाल, देवेंद्र बाकलीवाल जयपुर होंगे, मीटिंग में डॉ. अनिल जैन राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय प्रचार मंत्री महेंद्र बैराठी, बलवन्त राज महेता, दीपक गोधा, मनोज जैन, सुरेंद्र कुमार जैन बड़जात्या, ज्ञानचंद पाटनी, मनोज सोगानी, मनीष वैद आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन उदयभान जैन द्वारा किया एवं कार्यक्रम के समापन पर सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया गया।

सीकर दीक्षा तीर्थ है, दीक्षा पाप कर्मों के प्रक्षालन के लिए ली जाती है

- आचार्यश्री वर्धमान सागरजी

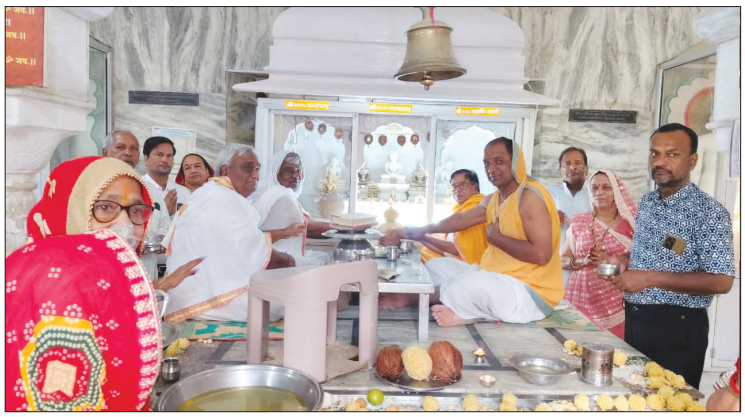


सीकर। दिगंबर साधु के पास संतोष, धैर्य, उत्तम तप होता है उनका ज्ञान ही धन होता है साधु मुनि, अनगार, श्रमण यति होते हैं। अनगार का आशय जो घर में नहीं रहे अर्थात् घर में निवास नहीं करें वह अनगार साधु होते हैं। श्री अजीत सागर जी ने सन् 1961 में मुनि दीक्षा आचार्य शिवसागर जी से ली उस समय एक मुनि 4 आर्यिका एक क्षुल्लक और एक क्षुल्लिका कुल 8 दीक्षा हुई। इसी चातुर्मास में 9 दीक्षा संस्कार हमारे द्वारा हुए। इसी सीकर नगर में जब आचार्य श्री धर्मसागर जी की सन् 1987 में समाधि हुई तब समस्त संघ के साधुओं ने निर्णय कर लिखित पत्र पर हस्ताक्षर कर उन्हें संघ का नया आचार्य घोषित किया। आचार्य हमेशा साधु ही बनाते हैं। यह मंगल देशना आचार्य श्री अजीत सागर जी महाराज के मुनि दीक्षा के 65वें दीक्षा वर्ष दिवस पर आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने आचार्य धर्म सागर सभागृह में व्यक्त किए। डॉ. राजेश पंचोलिया के अनुसार आचार्य श्री ने आगे बताया कि दीक्षा पाप कर्मों के प्रक्षालन के लिए ली जाती है। दीक्षा संयम धारण कर समिति चिन्ह धर्म से पुरुषार्थ कर जीवन उन्नत बनाया जाता है। सीकर नगर में अभी तक 17 दीक्षा हो गई है यह समाज के लिए गौरव की बात है। आने वाली पीढ़ी को भी इतिहास पता लगे इसके लिए दीक्षाओं का, समाधि का इतिहास भवन में अंकित कराने की प्रेरणा दी। साधु के पास समता और ज्ञान रूपी धन रहता है वह तपस्या कर कर्मों को नष्ट करते हैं। इसके पूर्व संघ के गुरुजी श्री धर्मचंद शास्त्री सीकर ने आचार्य श्री अजित सागर जी के प्रति भावांजलि में बताया कि धर्म के अवसर छोड़ देने से उन्नति नहीं होती। महापुरुषों के नाम पूजन स्तुति करने से पाप कम होते हैं। श्री विलोक मति जी ने बताया कि समय का उपयोग करते थे। ट्रेन आने में समय था प्लेटफार्म पर तल्लीन होकर स्वाध्याय करने लगे, ट्रेन आकर चली गई पता भी नहीं लगा, वह भगवान पूर्वाचार्यों की पूजन संस्कृत में कराने की प्रेरणा देते थे। मुनि श्री तप सागर जी ने आचार्य श्री अजित सागर जी के अनेक संस्मरण भाव विभोर होकर बताए। आचार्य श्री अजित सागर जी ने आने का पत्र दिया जब मुनि श्री वर्धमान सागर जी ने दर्शन किये। मुनि श्री ने नेत्रों की पावन धारा ने आचार्य श्री अजित सागर जी के चरण प्रक्षालन किए, वहीं आचार्य श्री अजित सागर जी के नेत्रों के प्रेमाश्रु मुनि श्री वर्धमान सागर के मस्तक पर प्रवाहित हो रहे थे। आपके लिखित पत्र से आचार्य पद श्री वर्धमान सागर जी को दिया गया। मुनि श्री मुमुक्षु सागर जी ने पूर्वाचार्यों के गुण आचार्य श्री वर्धमान सागर जी में है। मुनि श्री हितेन्द्र सागर जी ने सन 1961 के मुनियों साधुओं के नाम शिलालेख पर अंकित करने की प्रेरणा दी। स्वाध्याय के लिए समय उपयोगकर्ता थे। आचार्य श्री के मंचासीन होने पर दीप प्रवज्जलन, चरण प्रक्षालन कर जिनवाणी बीसपंथी मंदिर समिति, चातुर्मास कमेटी बाहर से आये संदीप सुदीप पारसोला ने किया। आचार्य श्री अजित सागर जी पूजन श्री पद्म यश मति, श्री दिव्ययशमति जी ने संस्कृत में कराई स्थापना, जल चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप फल, अर्घ्य सीकर जैन समाज मंदिर कमेटी, चातुर्मास समिति विभिन्न धार्मिक मंडलों बाहर से आये डा. राजेश पंचोलिया, धर्मचंद गुरुजी ने नृत्य पूर्वक अर्पित किये। वर्तमान में आचार्य श्री अजित सागर जी वर्तमान में श्री पुण्य सागर जी, आर्यिका श्री सौरभमति, आर्यिका श्री चैत्यमति माताजी संयम साधना कर रहे हैं। **- राजेश पंचोलिया**

फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के जिनालयों में भगवान महावीर निर्वाणोत्सव का लाडू चढ़ाया

कस्बे में विराजमान आर्यिका श्रुतमति माताजी, आर्यिका सुबोधमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य हुआ मुख्य आयोजन

राजाबाबू गोधा, फागी, संवाददाता



10 नवम्बर। जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर जीवो और जीने का दिव्य संदेश देने वाले विश्व वंदनीय भगवान महावीर का 2553वां निर्वाणोत्सव सोमवार 9 नवम्बर को फागी कस्बे में विराजमान आर्यिका श्रुतमति माताजी, आर्यिका सुबोधमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में जैन धर्मावलंबियों द्वारा हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में राजस्थान जैन सभा शाखा फागी के महामंत्री राजाबाबू गोधा ने शिरकत करते हुए बताया कि कस्बे के आदिनाथ जिनालय, पार्श्वनाथ मंदिर, मुनि सुव्रतनाथ जिनालय, त्रिमूर्ति मंदिर, पार्श्वनाथ चैत्यालय, चंदप्रभु नसियां तथा चंद्रपुरी दिगम्बर जैन मंदिर सहित परिक्षेत्र के चकवाडा, चोरू, मंडावरी, नारेडा, मेहंदवास, नीमेडा, लसाडिया तथा लदाना सहित सभी जगह भगवान महावीर की अष्ट द्रव्यों से संगीतमय पूजा अर्चना की गई तथा निर्वाण काण्ड भाषा के द्वारा सामूहिक उच्चारण करने के पश्चात् जयकारों के बीच प्रातः 8 बजे निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। कार्यक्रम में राजस्थान जैन महासभा फागी शाखा के अध्यक्ष महावीर अजमेरा एवं अग्रवाल समाज फागी के अध्यक्ष महावीर झंडा ने बताया कि उत्तर पुराण में आचार्य गुणभद्र (7-8 वीं शताब्दी) ने लिखा है कि 15 अक्टूबर, 527 बीसीई कार्तिक कृष्णा अमावस्या स्वाति नक्षत्र के उदय होने पर भगवान महावीर ने सुप्रभात की शुभ बेला में अघातिया कर्मों को नष्ट कर निर्वाण प्राप्त किया था। उस समय दिव्यात्माओं ने महावीर प्रभू की पूजा की और अत्यंत दीप्तिमान जलती प्रदीप-पंक्तियों के प्रकाश में आकाश तक को प्रकाशित करती हुई पावां नगरी सुशोभित हुई तथा सम्राट श्रेणिक आदि नरेन्द्रों ने अपनी प्रजा के साथ निर्वाण उत्सव मनाया, उसी समय से प्रति वर्ष महावीर जैनेन्द्र के निर्वाण को अत्यंत श्रद्धा एवं भक्ति भाव पूर्वक मनाया जाकर नैवेद्य (लाडू) से पूजा की जाती है। कार्यक्रम में अग्रवाल समाज के मंत्री कमलेश चौधरी ने बताया कि इसका उल्लेख प्रसिद्ध जैन ग्रंथ हरिवंश पुराण में भी हैं, जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के 256 वर्ष साढ़े तीन माह बाद महावीर का जन्म हुआ था, 72 वर्ष की उम्र के अन्त में शुभ मिती कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के अन्त समय (अमावस्या के भोर में प्रातःकाल) स्वाति नक्षत्र में मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त किया। उसी समय भगवान महावीर के प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी को केवलज्ञान रुपी लक्ष्मी प्राप्त हुई और देवों ने रत्नमयी दीपकों का प्रकाश कर उत्सव मनाया, कार्यक्रम में गोधा ने बताया कि फागी कस्बे में विराजमान आर्यिका श्रुतमति माताजी एवं आर्यिका सुबोधमति माताजी तथा गुणस्थली चकवाडा में विराजमान गणिनी आर्यिका सम्मेद शिखर माताजी एवं आर्यिका केवल श्री माताजी ससंघ के पावन सानिध्य पूजा अर्चना एवं निर्वाण लाडू चढ़ाने के विशेष आयोजन किए तथा मंदिरों में सामूहिक रूप से जयकारों के साथ निर्वाण काण्ड भाषा का सामूहिक उच्चारण एवं महावीराष्ट्रक स्तोत्रम् का पाठ करने के बाद निर्वाण लाडू चढ़ाकर सुख समृद्धि की कामना की गई, बाद में भगवान महावीर की सामूहिक रूप से महाआरती की गई, कार्यक्रम में सारा सकल जैन समाज मौजूद था।



संत शिरोमणी आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज का फिरोजाबाद में सन् 1975 का पिच्छिका परिवर्तन का दुर्लभ चित्र



वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय राजकीय अतिथि, आचार्य श्री 108 शशांक सागर जी मुनिराज के चरणों में शत् शत् नमन्

आचार्य शशांक सागर वचन

बीसवीं सदी के मुनिकुंजर ज्येष्ठाचार्य आदिसागर जी (अंकलीकर) के चतुर्थ पट्टाधीश, प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती, महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चरित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन, वंदन।

अपनों का साथ बहुत आवश्यक है, सुख है तो बढ़ जाता है और दुःख हो तो बट जाता है।

-: नमनकर्ता :-

ऋषभ कुमार सेठी तिलक नगर जयपुर
श्रीमती राखी गंगवाल जयपुर
दुलीचंद बिनायक्या डीमापुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

घास-फूस से ढंक गया था 12वीं शताब्दी का जिनालय

सरिता एम. के. जैन परिवार ने जीर्णोद्धार कर दिया नया स्वरूप

तमिलनाडु के कावनूर में अतिशयकारी श्री 1008 सुपार्श्वनाथ भगवान के प्राचीन मंदिर का पुनरुद्धार: दक्षिण भारत के भामाशाह परिवार की पहल से जीवंत हुई जैन संस्कृति की धरोहर

राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद





कावनूर (तमिलनाडु)। समय के थपेड़ों और लंबे समय तक उपेक्षा के कारण 12वीं शताब्दी का एक प्राचीन जिनालय पूरी तरह खंडहर में तब्दील हो गया था। मंदिर परिसर में घास-फूस उग आई थी और उसकी हालत ऐसी हो गई थी कि वहां दोबारा भव्य जिनालय आकार लेगा, इसकी कल्पना करना भी मुश्किल था। लेकिन भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा, समर्पण और प्राचीन जैन धरोहर के संरक्षण के संकल्प ने असंभव से दिखने वाले इस कार्य को संभव कर दिया। दक्षिण भारत के भामाशाह के रूप में प्रतिष्ठित श्रीमती सरिता एम. के. जैन के परिवार ने आर्थिक सहयोग देकर तमिलनाडु में अरक्कोणम के निकट कावनूर स्थित अतिशयकारी श्री 1008 सुपार्श्वनाथ भगवान के प्राचीन जिनालय का जीर्णोद्धार कराया। प्राचीनता की गरिमा को बनाए रखते हुए पत्थरों से निर्मित यह जिनालय आज जैन धर्म की ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण की प्रेरक मिसाल बन गया है।

खंडहर देखकर लिया जिनालय के पुनरुद्धार का संकल्प: प्राचीन जिनालय की जानकारी मिलने पर श्री एम. के. जैन एवं श्रीमती सरिता जैन ने यहां पहुंचकर भगवान के दर्शन किए और मंदिर की ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक महत्ता को निकट से अनुभव किया। पूरी तरह खंडित मंदिर और परिसर में उगी घास-फूस को देखकर उनके मन में इस अमूल्य धरोहर को पुनर्जीवित करने की भावना जागृत हुई। उन्होंने जिनालय के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया।

यह केवल एक मंदिर के निर्माण का निर्णय नहीं था, बल्कि जैन धर्म की प्राचीन परंपरा, सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक चेतना को भावी पीढ़ियों तक पहुंचाने की पहल थी। परिवार ने आर्थिक सहयोग देकर मंदिर को पुनः भव्य स्वरूप प्रदान कराया। विशेष बात यह रही कि प्राचीनता की गरिमा और पारंपरिक स्थापत्य शैली का सम्मान करते हुए पत्थरों से जिनालय का निर्माण कराया गया। इससे खंडहर हो चुकी धरोहर को नया जीवन मिला और श्रद्धालुओं के लिए भगवान के दर्शन एवं आराधना का मार्ग फिर से प्रशस्त हुआ।

300 से अधिक श्रद्धालुओं की मौजूदगी में पंचकल्याणक महोत्सव: जिनालय के पुनरुद्धार के बाद विगत दिनों डॉ. स्वस्ति श्री धवलकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी के पावन सान्निध्य में एक दिवसीय पंचकल्याणक महोत्सव विधि- विधानपूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री एम. के. जैन साहब स्वयं उपस्थित रहे। महोत्सव में 300 से अधिक जैन श्रद्धालुओं ने सहभागिता की।

आयोजन श्रद्धा, भक्ति और धर्मप्रभावना का संगम बना। श्रद्धालुओं ने भगवान श्री सुपार्श्वनाथ के दर्शन कर भक्तिभाव से वंदन किया। पंचकल्याणक महोत्सव के माध्यम से जिनालय की धार्मिक महत्ता और अधिक प्रखर हुई तथा लंबे समय से उपेक्षित रही इस प्राचीन धरोहर में एक बार फिर धार्मिक गतिविधियों का वातावरण बना।

भगवान की प्रतिमा की महिमा से जुड़ी है जनश्रुति: कावनूर के इस प्राचीन जिनालय की महिमा से जुड़ी एक जनश्रुति भी पीढ़ियों से श्रद्धापूर्वक सुनाई जाती है। कहा जाता है कि किसी समय कुछ लोग यहां विराजमान भगवान श्री सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा को चुराकर विदेश ले जाना चाहते थे। वे प्रतिमा को जहाज पर रखकर अपने गंतव्य की ओर रवाना हुए, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से जहाज आगे नहीं बढ़ पाया। काफी प्रयासों के बाद भी जब जहाज अपनी जगह से नहीं हिला, तब एक वृद्ध व्यक्ति की वाणी सुनाई दी। उसने बताया कि जहाज में भगवान की प्रतिमा रखी है और जब तक उसे नीचे नहीं उतारा जाएगा, जहाज आगे नहीं बढ़ सकेगा। यह सुनकर वहां मौजूद लोग आश्चर्यचकित रह गए। उन्हें समझ नहीं आया कि उस वृद्ध व्यक्ति को जहाज में रखी पत्थर की प्रतिमा के बारे में कैसे पता चला। जनश्रुति के अनुसार, प्रतिमा को नीचे उतारते ही जहाज आगे बढ़ने लगा। इस घटना से प्रभावित होकर प्रतिमा को ले जाने वाला व्यक्ति उसे वापस उसी स्थान पर छोड़ गया, जहां भगवान मूल रूप से विराजमान थे। श्रद्धालु इस प्रसंग को भगवान श्री सुपार्श्वनाथ की अतिशयकारी महिमा और प्रतिमा के प्रति अटूट आस्था का प्रतीक मानते हैं।

जीर्णोद्धार में कई लोगों का रहा योगदान: इस प्राचीन जिनालय के जीर्णोद्धार में प्रारंभ से लेकर विभिन्न चरणों तक कई लोगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अरिहंतगिरि क्षेत्र से प्रतिष्ठाचार्य वसंत शास्त्री, श्री एस. वी. सुरेश जैन, श्री शिखमणि एवं श्री बी. अशोक जैन ने कई बार स्थल पर पहुंचकर कार्यभार संभाला और नेतृत्व प्रदान किया। उनके योगदान से जिनालय के पुनरुद्धार का कार्य आगे बढ़ा।

जैन संस्कृति के संरक्षण की प्रेरक मिसाल: आज जब आधुनिकता की दौड़ में अनेक प्राचीन स्मारक और धार्मिक धरोहरें उपेक्षा का शिकार हो रही हैं, ऐसे समय में श्री एम. के. जैन, श्रीमती सरिता एम. के. जैन एवं उनके परिवार का यह कार्य विशेष महत्व रखता है। दक्षिण भारत के विभिन्न मंदिरों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में सहयोग देने वाला यह परिवार अपनी श्रद्धा और समर्पण से जैन विरासत के संरक्षण में योगदान दे रहा है। कावनूर के जिनालय का पुनरुद्धार केवल आर्थिक सहयोग से मंदिर बनवाने तक सीमित नहीं है। यह धार्मिक निष्ठा, सांस्कृतिक उत्तरदायित्व और आध्यात्मिक समर्पण का परिचायक है। प्राचीन पत्थरों और पारंपरिक स्थापत्य शैली को महत्व देते हुए एक पूरी तरह खंडित जिनालय को फिर से भव्य स्वरूप देना अपने आप में महत्वपूर्ण पहल है।

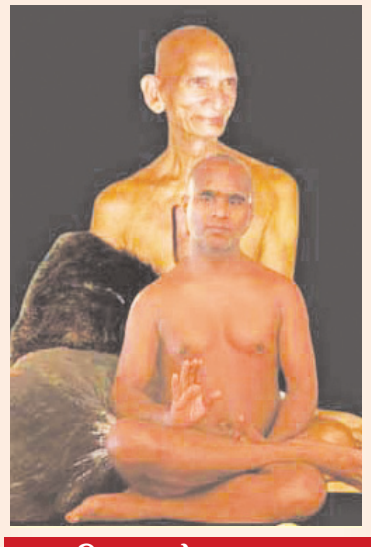
यह कार्य समाज को संदेश देता है कि प्राचीन धरोहरें केवल अतीत की स्मृतियां नहीं, बल्कि हमारी आस्था, संस्कृति और पहचान की जीवंत आधारशिलाएं हैं। इनका संरक्षण वर्तमान पीढ़ी का दायित्व है ताकि आने वाली पीढ़ियां भी अपने गौरवशाली इतिहास से परिचित हो सकें।

कावनूर की पावन भूमि पर स्थित अतिशयकारी श्री 1008 सुपार्श्वनाथ भगवान का यह जिनालय जैन समाज के लिए गौरव का विषय है। श्रीमती सरिता एम. के. जैन के परिवार ने जिस श्रद्धा, उदारता और संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य को साकार किया है, वह समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। ऐसे कार्यों का महत्व वर्तमान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि धर्म, संस्कृति और इतिहास की सेवा के रूप में लंबे समय तक स्मरण किया जाता है।

भगवान श्री सुपार्श्वनाथ के चरणों में कोटि-कोटि वंदन। यह पावन जिनालय अनंत काल तक धर्म, शांति, अहिंसा और आध्यात्मिक चेतना का केंद्र बना रहे तथा श्रीमती सरिता एम. के. जैन एवं उनके परिवार पर भगवान का मंगल आशीर्वाद बना रहे।

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स
कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com



सन्मतिसुनीलम् - भाग 01

बीसवीं सदी के मुनिकुंजर ज्येष्ठाचार्य आदिसागर जी (अंकलीकर) के चतुर्थ पट्टाधीश, प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती, महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चरित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन, वंदन।

संयोग से जीवन मिलता है और सहयोग से जीवन चलता है।

-: नमनकर्ता :-

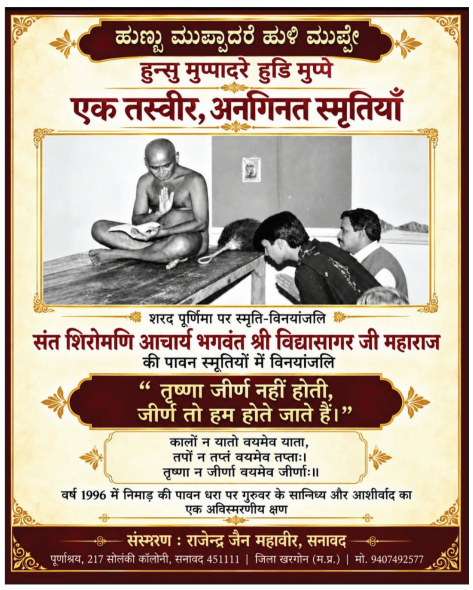
सुरेश कुमार संघवी बांसवाड़ा
अशोक कुमार जैन बड़ोदरा
श्रीमती कमलेश जैन बड़ोदरा
अल्पेश शाह बड़ोदरा
स्वेताग भाई शाह बड़ोदरा
श्रीमती अलका बडजात्या बड़ोदरा
पारस विपुल शाह ईडर
श्री भैरूनाथ पेन्टस एकलिंगपुरा उदयपुर
अशोक चान्दवाड़ कीर्ती नगर जयपुर
मणिवेन साकलचन्द शाह भयन्दर मुम्बई
अनिल जैन IRS (R) अरविन्द जैन श्याम नगर जयपुर
सन्मतिसुनीलम् महिला मण्डल धवास जयपुर
पवन कुमार बड़जात्या निवासी मरवा प्रवासी किशनगढ़
श्रीमती मंजू जयकुमार बड़जात्या सीकर वाले जयपुर
धर्मचंद राकेश लुहाड़िया धवास जयपुर
विनय कुमार सिंघल जयपुर
मदन जैन हुमंड बड़ोदरा
प्रमिल वेन जय कुमार शाह मुम्बई
रमेश कुमार यशवन्त कुमार जैन मुम्बई
प्रमेश मीना रांवका सांभरवाले डीसीएम जयपुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

"हुन्सु मुप्पादरे हुडि मुप्पे": तृष्णा बूढ़ी नहीं होती, बूढ़े तो हम होते जाते हैं!

एक तस्वीर, अनगिनत स्मृतियाँ: आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की स्मृतियों में एक भावपूर्ण संस्मरण

सम्पादकीय



कन्नड़ की लोकोक्ति ''हुन्सु मुप्पादरे हुडि मुप्पे'' का भावार्थ है-इमली का वृक्ष बूढ़ा हो सकता है, लेकिन उसकी खटाई जवान बनी रहती है। इसी प्रकार मनुष्य की उम्र ढलती जाती है, शरीर शिथिल होता जाता है, लेकिन तृष्णा का स्वभाव नहीं बदलता। इच्छाएँ कभी बूढ़ी नहीं होतीं, बूढ़े तो हम होते जाते हैं।

संत शिरोमणि आचार्य भगवंत श्री विद्यासागर जी महाराज ने वर्ष 1996 में निमाड़ की पावन धरा पर अपने प्रवचन में इस लोकोक्ति के माध्यम से जीवन का गूढ़ सत्य समझाया था। इस प्रसंग में उन्होंने संस्कृत की यह कालजयी सूक्ति भी सुनाई थी।

''कालो न यातो वयमेव याता,?
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।।''

इसका भाव है-समय नहीं बीता, बल्कि हम स्वयं बीतते गए, तपस्या नहीं की, बल्कि जीवन की तपन में स्वयं तपते रहे, तृष्णा बूढ़ी नहीं हुई, बूढ़े तो हम होते गए।

आचार्य श्री के मुखारविंद से सुना यह जीवन-दर्शन आज भी मेरे अंतर्मन में गूँजता है। उनकी स्मृतियों से जुड़ी एक श्वेत-श्याम तस्वीर जब भी सामने आती है, मन तीन दशक पीछे लौट जाता है। वह तस्वीर केवल बीते समय का चित्र नहीं, बल्कि मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर है-गुरुवर के निकट से प्राप्त आशीर्वाद और उनके सान्निध्य में बिताए अविस्मरणीय क्षणों की साक्षी। आज आचार्य श्री हमारे बीच सशरीर उपस्थित नहीं हैं। उनके समाधिमरण के बाद शरद पूर्णिमा पर उनकी जन्म-स्मृतियाँ मन को और अधिक भावुक कर देती हैं। ऐसे अवसर पर यह तस्वीर उनके श्रीचरणों में श्रद्धा, कृतज्ञता और विनयांजलि अर्पित करने का माध्यम बन जाती है।

आशीर्वाद का वह अनमोल क्षण: वर्ष 1996 में आचार्य भगवंत श्री विद्यासागर जी महाराज पहली बार निमाड़ क्षेत्र में पधारे थे। सिद्धवरकूट में उनके लंबे प्रवास के दौरान मुझे लगभग पंद्रह-बीस दिनों तक उनके सान्निध्य में रहने का सौभाग्य मिला। इसके बाद जब आचार्य श्री पावागिरि जी ऊन की ओर विहार कर रहे थे, तब मुझे भी उनके साथ चलने और सेवा करने का अवसर मिला। उस समय मैं पावागिरि जी ऊन सिद्ध क्षेत्र में एक छोटे-से सेवक के रूप में कार्य कर रहा था और क्षेत्र की व्यवस्थाओं का दायित्व भी सँभालता था। आचार्य श्री से अनेक अवसरों पर आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला, लेकिन इतनी निकटता से आशीर्वाद प्राप्त करने का यह पहला अवसर था। इसी क्षण की स्मृति इस तस्वीर में सुरक्षित है। हमारे साथ ऊन के राजेन्द्र पाटिल नाम के एक फोटोग्राफर थे। वे दिव्यांग थे, लेकिन अपने कार्य के प्रति उनका समर्पण अद्भुत था। आज वे भी हमारे बीच नहीं हैं, किंतु उनके कैमरे में कैद किया गया यह क्षण आज तक मेरे पास सुरक्षित है।

मैं जानता था कि आचार्य श्री सामान्यतः तस्वीरें खिंचवाने के इच्छुक नहीं रहते थे। इसलिए मैंने फोटोग्राफर से कहा कि गुरुवर के आशीर्वाद का क्षण यदि सहज रूप से कैमरे में कैद हो जाए, तो यह जीवनभर की पूँजी बन जाएगा। मेरी भावना तस्वीर खिंचवाने की नहीं, बल्कि उस पावन अनुभूति को सहेज लेने की थी।

आज उस तस्वीर को देखता हूँ तो लगता है, जैसे गुरुवर का वह आशीर्वाद आज भी मेरे सिर पर बना हुआ है। समय बदल गया, परिस्थितियाँ बदल गईं, लेकिन उस क्षण से जुड़ी श्रद्धा आज भी वैसी ही है।

प्राचीन मंदिरों का अवलोकन और गुरुवर का विहार: पावागिरि ऊन क्षेत्र में एक सुबह मैं आचार्य श्री के दर्शन करने पहुँचा। क्षेत्र की जानकारी देते हुए मैंने निवेदन किया कि यहाँ बारहवीं शताब्दी के प्राचीन मंदिरों के अवशेष हैं। यदि गुरुवर उन्हें देखना चाहें, तो मैं वहाँ ले चल सकता हूँ।

आचार्य श्री ने सहज भाव से कहा, ''बिल्कुल देखेंगे।'' दोपहर की सामायिक के बाद का समय निर्धारित हुआ। तय समय पर हम उन्हें पुराने गुरुकुल के पीछे स्थित प्राचीन चौबारा डेरा ले गए। वहाँ उन्होंने प्राचीन दिगंबर जैन प्रतिमाओं और ऐतिहासिक अवशेषों का अवलोकन किया। मैं साथ-साथ चलता हुआ उन्हें उपलब्ध जानकारी देता रहा।

अवलोकन के बाद आचार्य श्री ने वहीं से आगे विहार कर दिया। सब कुछ इतनी सहजता से हुआ कि हम भी उनके साथ आगे बढ़ चले। कभी-कभी जीवन में कोई क्षण सामान्य-सा प्रतीत होता है, लेकिन समय बीतने के साथ वही क्षण अनमोल निधि बन जाता है।

जब पूरा गाँव सेवा में जुट गया – उस समय न मोबाइल फोन थे, न आज जैसे आधुनिक संचार साधन। फिर भी आचार्य श्री के आगमन की सूचना फैलते ही पूरा क्षेत्र श्रद्धा और सेवा के भाव से भर उठा था। मुनिसंघ के आहार की व्यवस्था के लिए हम गाँव के किसान भाइयों के घरों में दूध के डिब्बे रख आते थे। सुबह दूध एकत्रित किया जाता और फिर उसे विभिन्न चौकों तक पहुँचाया जाता था। जैन समाज के साथ अन्य समाजों के लोगों ने भी भरपूर सहयोग दिया।

मेरे पूज्य पिताजी श्री पूरनचंद जी जैन भी उस समय मेरे साथ सेवा में सहभागी थे। उनके सान्निध्य में गुरुवर की सेवा करने का अवसर मेरे जीवन की उन स्मृतियों में शामिल है, जिन्हें याद करते हुए आज भी मन श्रद्धा से भर जाता है। पंडित श्री बाबूलाल जी फणीश, श्री राजमल जी जैन, श्री हीरालाल जी जैन, श्री जे. के. जैन बैंक, श्री अजित जैन सर, श्री कृष्ण जी शर्मा और श्री रामेश्वर सिंह भारद्वाज सहित मेरे मित्र और अनेक आत्मीयजन एवं सहयोगी हर समय सेवा में तत्पर रहते थे।

इनमें से कुछ आत्मीयजन अब हमारे बीच नहीं हैं। उनकी स्मृतियाँ भी उस ऐतिहासिक प्रवास के साथ जुड़ी हुई हैं। उस समय साधन सीमित थे, लेकिन सेवा, समर्पण और सामूहिकता का भाव असीम था। प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार योगदान देना चाहता था।

जुलवानिया में उमड़ा श्रद्धा का सागर: ऊन से आचार्य श्री ने लगभग चौदह-पंद्रह किलोमीटर का विहार किया और से गाँव में रात्रि विश्राम किया। अगले दिन वे जुलवानिया पहुँचे, जहाँ आहार की व्यवस्था एक विद्यालय परिसर में की गई थी। सुबह वहाँ पहुँचकर हमने देखा कि दूर-दूर से आए श्रद्धालुओं की गाड़ियाँ परिसर में खड़ी थीं। चौकों की व्यवस्था के लिए स्थान मिलना भी कठिन हो रहा था। हम आश्चर्यचकित थे कि बिना मोबाइल और आधुनिक संचार साधनों के आचार्य श्री के विहार की सूचना इतनी दूर-दूर तक कैसे पहुँच जाती थी? वहाँ श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या और अनेक चौकों की व्यवस्था देखकर अनुभव हुआ कि संत का प्रभाव केवल उनके प्रवचनों तक सीमित नहीं रहता। उनका त्यागमय जीवन स्वयं लोगों को जोड़ने, सेवा के लिए प्रेरित करने और धर्म के प्रति आस्था जगाने की शक्ति रखता है।

गुरुकुल की स्मृतियाँ और तृष्णा पर अमर प्रवचन: ऊन में श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ने पर हायर सेकेंडरी स्कूल परिसर में टेंट लगाकर प्रवचन की व्यवस्था की गई। महावीर दिगंबर जैन गुरुकुल के विद्यार्थी, मेरे मित्र और गाँव के लोग आगवानी तथा अन्य व्यवस्थाओं में जुटे रहते थे।

आचार्य श्री पुराने गुरुकुल भवन के कमरा नंबर तीन में ठहरे थे। जनवरी की कड़ाके की ठंड, गुरुवर का सान्निध्य और प्रवचन सुनने के लिए उमड़ते श्रद्धालु-ये दृश्य आज भी स्मृतियों में जीवंत हैं। वह पुराना भवन अब नहीं रहा, लेकिन उससे जुड़ी अनुभूतियाँ आज भी मन में बसी हैं। उन दिनों प्रवचनों को टेप रिकॉर्डर में सुरक्षित किया जाता था। हम उन प्रवचनों को बार-बार सुनते थे। विशेष रूप से तृष्णा पर दिया गया उनका प्रवचन मेरे मन पर गहरी छाप छोड़ गया। कन्नड़ की लोकोक्ति और संस्कृत की सूक्ति के माध्यम से आचार्य श्री ने समझाया कि मनुष्य की इच्छाओं का कोई अंत नहीं है। उम्र बढ़ने के साथ शरीर भले ही कमजोर हो जाए, लेकिन अधिक पाने की आकांक्षा बनी रहती है। एक इच्छा पूरी होती है, तो दूसरी जन्म ले लेती है। मनुष्य जीवनभर संग्रह में लगा रहता है, जबकि संतोष, संयम और आत्मचिंतन ही उसे वास्तविक शांति की ओर ले जा सकते हैं। आज भी जब भौतिक उपलब्धियों की दौड़ में मनुष्य को निरंतर असंतुष्ट देखता हूँ, तो उनका वह प्रवचन स्मरण हो आता है। उनकी वाणी केवल सुनने के लिए नहीं, बल्कि जीवन में उतारने के लिए थी। यही कारण है कि वर्षों पहले सुना गया उनका संदेश आज भी जीवन के अनेक पड़ावों पर नई रोशनी देता है।

शरद पूर्णिमा पर स्मृतियों की विनयांजलि: समय की धारा में लगभग तीन दशक बीत चुके हैं। गुरुकुल का पुराना भवन नहीं रहा। अनेक आत्मीयजन संसार से विदा हो गए। उस तस्वीर को खींचने वाले राजेन्द्र पाटिल भी अब हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन उनके कैमरे में कैद किया गया वह क्षण आज भी मेरे पास सुरक्षित है।

आचार्य श्री के समाधिमरण के बाद उनकी स्मृतियाँ और भी अधिक आत्मीयता से हृदय में उतरती हैं। शरद पूर्णिमा के पावन अवसर पर उनके जन्मदिवस की स्मृति मन को उनके चरणों की ओर ले जाती है। यह अवसर उनके त्याग, तप, संयम, करुणा और आत्मकल्याण के संदेश को पुनः स्मरण करने का है।

गुरुवर से जीवन में अनेक बार आशीर्वाद प्राप्त हुआ, लेकिन यह पहला अवसर था, जब उनके इतने निकट से प्राप्त आशीर्वाद का क्षण तस्वीर में सुरक्षित हो गया। आज वह तस्वीर मेरे लिए केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान में भी प्रेरणा देने वाली आध्यात्मिक पूँजी है। उसमें मुझे अपना हाथ जोड़ना भर दिखाई नहीं देता। उसमें पूज्य पिताजी का सान्निध्य, सेवा में जुटे साथियों का समर्पण, गाँव के लोगों की श्रद्धा, गुरुकुल के वे दिन और आचार्य श्री के दिव्य व्यक्तित्व की स्मृतियाँ एक साथ सजीव हो उठती हैं। कुछ तस्वीरें समय के साथ पुरानी हो जाती हैं, लेकिन उनसे जुड़ी अनुभूतियाँ कभी पुरानी नहीं होतीं। कुछ आशीर्वाद क्षणभर में मिलते हैं, लेकिन उनकी अनुभूति जीवनभर साथ रहती है। मेरे लिए यह तस्वीर ऐसी ही अमूल्य निधि है-गुरुवर के आशीर्वाद का वह क्षण, जो कैमरे में कैद हुआ, लेकिन जिसकी अनुभूति आज भी हृदय में जीवित है।

शरद पूर्णिमा के इस पावन अवसर पर आचार्य भगवंत श्री विद्यासागर जी महाराज के श्रीचरणों में कोटिशः विनयांजलि।गुरुवर! आपकी स्मृतियाँ ही मेरी पूँजी हैं, आपका मार्गदर्शन ही मेरी प्रेरणा है और आपका आशीर्वाद ही मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर है।

- राजेन्द्र जैन 'महावीर',
सह सम्पादक- जैन गजट



सन्मतिसुनीलम् - भाग 02

बीसवीं सदी के मुनिकुंजर ज्येष्ठाचार्य आदिसागर जी (अंकलीकर) के चतुर्थ पट्टाधीश, प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती, महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चरित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन, वंदन।

कहने को तो सभी रिश्ते अच्छे होते हैं पर जो रिश्ते समय पर साथ दें वही सच्चे होते हैं।

-: नमनकर्ता :-

राजकुमार बड़जात्या सभापति नगर परिषद किशनगढ .....

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

धर्म का दिखावा और धार्मिक होने का पाखंड : जब आस्था चेहरे पर होती है, लेकिन आचरण में नहीं



डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

धर्म का वास्तविक परिचय मंदिरों में उपस्थिति, माथे पर तिलक, हाथों में माला और दान की घोषणाओं से नहीं, बल्कि मन की निर्मलता, व्यवहार की शालीनता और जीवन में अपनाए गए सिद्धांतों से होता है। आज आवश्यकता धर्म का प्रदर्शन करने वालों की नहीं, बल्कि धर्म को अपने आचरण में उतारने वालों की है।

1. धर्म के नाम पर बढ़ता दिखावा - एक कड़वी सच्चाई: आजकल समाज में एक विचित्र विरोधाभास देखने को मिलता है। धार्मिक गतिविधियाँ बढ़ रही हैं, मंदिरों की संख्या बढ़ रही है, धार्मिक आयोजन पहले से अधिक भव्य हो रहे हैं, प्रवचन सुनने वालों की भीड़ उमड़ रही है, दान और पुण्य के नाम पर बड़ी-बड़ी घोषणाएँ हो रही हैं, सोशल मीडिया पर धार्मिक तस्वीरों और संदेशों की भरमार है, लेकिन इसके बावजूद मनुष्य के व्यवहार में अपेक्षित करुणा, विनम्रता, ईमानदारी, सहिष्णुता और संवेदनशीलता दिखाई नहीं देती। प्रश्न उठता है कि क्या हम वास्तव में धार्मिक होते जा रहे हैं या केवल धार्मिक दिखाई देने की प्रतिस्पर्धा में शामिल हो गए हैं? आज कुछ लोगों के लिए धर्म आत्मशुद्धि का मार्ग नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यक्तिगत प्रभाव, राजनीतिक पकड़ और अपनी छवि चमकाने का साधन बनता जा रहा है। वे मंदिरों में सबसे आगे दिखाई देते हैं, धार्मिक आयोजनों में प्रमुख स्थान चाहते हैं, दान देते समय अपना नाम सबसे बड़े अक्षरों में लिखवाना चाहते हैं, साधु-संतों के साथ तस्वीरें खिंचवाने में उत्सुक रहते हैं, लेकिन वही लोग अपने निजी जीवन में दूसरों का शोषण करने, झूठ बोलने, अपमान करने, छल-कपट करने और स्वार्थ सिद्ध करने से पीछे नहीं हटते। यह धर्म नहीं, धर्म का आवरण ओढ़कर अधर्म को छिपाने का प्रयास है। धर्म का सबसे बड़ा संकट नास्तिकता नहीं, बल्कि धार्मिकता के नाम पर पनपता पाखंड है।

2. धार्मिक दिखना और धार्मिक होना - दोनों में जमीन-आसमान का अंतर: धार्मिक दिखना बहुत आसान है, लेकिन धार्मिक होना अत्यंत कठिन। धार्मिक दिखने के लिए विशेष वस्त्र, तिलक, माला, पूजा-पाठ, व्रत, उपवास और धार्मिक आयोजनों में भाग लेना पर्याप्त हो सकता है। लेकिन धार्मिक होने के लिए अपने भीतर के अहंकार, क्रोध, लोभ, छल, कपट, ईर्ष्या और द्वेष को कम करना पड़ता है। इसके लिए आत्मनिरीक्षण और आत्मसंयम की आवश्यकता होती है। कोई व्यक्ति प्रतिदिन मंदिर जाता है, लेकिन घर लौटकर अपने परिवार के सदस्यों से अपमानजनक व्यवहार करता है। कोई व्यक्ति घंटों पूजा करता है, लेकिन व्यापार में ग्राहकों को धोखा देता है। कोई व्यक्ति लाखों रुपये दान करता है, लेकिन अपने कर्मचारियों का उचित पारिश्रमिक देने में आनाकानी करता है। कोई व्यक्ति संतों के चरणों में बैठता है, लेकिन अपने से कमजोर व्यक्ति को सम्मान देना नहीं जानता। क्या ऐसे व्यक्ति को वास्तविक अर्थों में धार्मिक कहा जा सकता है? धर्म का अर्थ केवल पूजा करना नहीं, बल्कि अपने जीवन को ऐसा बनाना है कि हमारे कारण किसी दूसरे जीव को अनावश्यक कष्ट न पहुँचे।

3. जैन दर्शन की दृष्टि से धार्मिक पाखंड: जैन आगमों में आत्मशुद्धि, संयम, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह पर विशेष बल दिया गया है। भगवान महावीर का संदेश केवल पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं था। उनका संदेश था-आत्मा को पहचानो, अपने विकारों पर विजय प्राप्त करो और प्रत्येक जीव के प्रति करुणा रखो। जैन दर्शन में कहा गया है-''परस्परोपग्रहो जीवानाम।'' अर्थात सभी जीव एक-दूसरे के उपकार और सहयोग से जुड़े हुए हैं। अब विचार कीजिए, जो व्यक्ति भगवान महावीर की प्रतिमा के सामने अहिंसा की आराधना करता है, लेकिन अपने व्यवहार से दूसरों को मानसिक पीड़ा पहुँचाता है, वह अहिंसा के वास्तविक अर्थ को कैसे समझ सकता है? जो व्यक्ति अपरिग्रह का उपदेश सुनता है, लेकिन धन, पद, प्रतिष्ठा और संपत्ति के लिए हर सीमा पार करने को तैयार है, वह अपरिग्रह को अपने जीवन में कैसे उतार रहा है? जो व्यक्ति क्षमावाणी पर बड़े-बड़े संदेश देता है, लेकिन वर्षों तक मन में बदले की भावना रखता है, उसकी क्षमा कितनी वास्तविक है? जैन धर्म में बाहरी तपस्या के साथ भावों की शुद्धि को अत्यंत महत्व दिया गया है। केवल शरीर को कष्ट देना तप नहीं है, अपने क्रोध, मान, माया और लोभ को जीतना भी तप है। वास्तव में, जो अपने भीतर के कषायों को नहीं जीत पाया, वह संसार के सामने धार्मिक होने का कितना भी प्रदर्शन करे, उसकी आध्यात्मिक यात्रा अधूरी ही रहेगी।

4. मंदिरों में भक्ति और जीवन में कटुता - यह कैसा विरोधाभास?: आज एक चिंताजनक प्रवृत्ति दिखाई देती है। कुछ लोग मंदिरों में घंटों बिताते हैं, लेकिन घर में परिवार के सदस्यों के साथ प्रेम और सम्मान से बात करने का समय नहीं निकालते। धार्मिक सभाओं में मधुर वाणी बोलते हैं, लेकिन अपने कर्मचारियों, नौकरों, छोटे व्यापारियों और कमजोर लोगों के साथ कठोर व्यवहार करते हैं। भगवान के सामने सिर झुकाते हैं, लेकिन अपने अहंकार के सामने किसी को झुकने पर मजबूर करते हैं। दूसरों को धर्म का उपदेश देते हैं, लेकिन स्वयं उन सिद्धांतों का पालन करने में असफल रहते हैं। क्या भगवान की पूजा का कोई अर्थ है, यदि हमारे व्यवहार से माता-पिता दुखी हों, पत्नी या पति अपमानित महसूस करें, बच्चे भयभीत रहें और हमारे अधीन काम करने वाले लोग शोषण का अनुभव करें? धर्म की शुरुआत घर से होती है। यदि घर में शांति, सम्मान, विश्वास और प्रेम नहीं है, तो केवल मंदिरों में जाकर शांति खोजने का प्रयास अधूरा है। एक सच्चा धार्मिक व्यक्ति सबसे पहले अपने परिवार के प्रति जिम्मेदार होता है। वह अपने घर को ही पहला तीर्थ मानता है, जहाँ प्रेम, सहनशीलता और सद्भाव की आराधना होती है।

5. दान-पुण्य या प्रतिष्ठा की खरीदारी?: दान भारतीय संस्कृति और जैन परंपरा का महत्वपूर्ण अंग है। दान का उद्देश्य जरूरतमंद की सहायता करना, शिक्षा को बढ़ावा देना, जीव दया करना, साधर्मियों की सहायता करना और समाज के कल्याण में योगदान देना है। लेकिन आज कहीं-कहीं दान भी प्रतिष्ठा की खरीदारी बनता दिखाई देता है। कौन कितना दान देगा, किसका नाम बड़े अक्षरों में लिखा जाएगा, किसे मंच पर कितनी देर सम्मान मिलेगा, किसकी तस्वीर प्रमुखता से प्रकाशित होगी और किसे मुख्य अतिथि बनाया जाएगा-इन बातों ने कई धार्मिक आयोजनों में वास्तविक उद्देश्य को पीछे छोड़ दिया है। दान देने के बाद यदि दानदाता को सम्मान न मिले तो नाराजगी, आलोचना और विवाद शुरू हो जाते हैं। प्रश्न है कि यदि दान के बदले सम्मान, प्रशंसा और प्रतिष्ठा की अपेक्षा है, तो क्या वह निःस्वार्थ दान रह जाता है? एक उदाहरण देखिए। एक व्यक्ति मंदिर निर्माण के लिए दस लाख रुपये देता है और चाहता है कि मंदिर के प्रवेश द्वार पर उसका नाम सबसे प्रमुखता से लिखा जाए। दूसरी ओर एक व्यक्ति किसी गरीब विद्यार्थी की फीस चुपचाप भर देता है, ताकि उसकी पढ़ाई न रुके। पहले व्यक्ति का दान सार्वजनिक है, दूसरे का दान मौन है। दोनों के योगदान का सामाजिक मूल्य हो सकता है, लेकिन निःस्वार्थ भावना की दृष्टि से दूसरे व्यक्ति का उदाहरण अधिक प्रेरणादायक है। दान की महानता उसकी राशि से नहीं, उसके पीछे छिपी भावना से तय होती है।

6. धार्मिक आयोजनों में अहंकार और प्रतिस्पर्धा: आज कई स्थानों पर धार्मिक आयोजन भक्ति से अधिक प्रतिष्ठा का विषय बनते जा रहे हैं। चातुर्मास के स्वागत में भव्यता की प्रतिस्पर्धा, साधु-संतों के आगमन पर दिखावे की होड़, मंच पर बैठने की व्यवस्था को लेकर नाराजगी, सम्मान समारोहों में नाम और पद को लेकर विवाद, बोलियों में एक-दूसरे से आगे निकलने की कोशिश-ये सब किस दिशा की ओर संकेत करते हैं? धर्म का उद्देश्य अहंकार को समाप्त करना है, लेकिन जब धर्म के मंच पर ही अहंकार का प्रदर्शन होने लगे, तो आत्ममंथन आवश्यक हो जाता है। साधु-संतों का सम्मान अवश्य होना चाहिए, लेकिन उनके नाम पर समाज में आर्थिक दिखावा और प्रतिष्ठा की प्रतिस्पर्धा नहीं होनी चाहिए।

7. सोशल मीडिया पर धार्मिकता का प्रदर्शन: डिजिटल युग में धार्मिकता का एक नया रूप सामने आया है। सुबह उठते ही धार्मिक संदेश, मंदिर की तस्वीरें, पूजा के वीडियो, प्रवचन के छोटे-छोटे अंश और भगवान की प्रतिमाओं के साथ अपनी तस्वीरें साझा करना आम हो गया है। इसमें कोई बुराई नहीं है। धार्मिक विचारों का प्रसार होना चाहिए और अच्छी प्रेरणा दूसरों तक पहुँचनी चाहिए। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब सोशल मीडिया पर धार्मिक दिखाई देने वाला व्यक्ति वास्तविक जीवन में दूसरों की भावनाओं को आहत करता है, झूठी खबरें फैलाता है, अपमानजनक टिप्पणियाँ करता है और समाज में वैमनस्य बढ़ाता है। किसी धार्मिक संदेश को साझा करना सरल है, लेकिन उस संदेश को अपने व्यवहार में उतारना कठिन है। यदि हम प्रतिदिन क्षमा का संदेश साझा करते हैं, तो क्या हम अपने विरोधियों को क्षमा कर पाते हैं? यदि हम अहिंसा का संदेश देते हैं, तो क्या हमारी भाषा अहिंसक है? यदि हम सत्य की महिमा बताते हैं तो क्या हमारे व्यावसायिक और व्यक्तिगत व्यवहार में सत्य है? धार्मिक पोस्ट डालने से व्यक्ति धार्मिक नहीं बनता, धार्मिक विचारों के अनुरूप जीने से बनता है।

8. धर्म के नाम पर दूसरों का मूल्यांकन और चरित्र प्रमाणपत्र: एक और गंभीर समस्या यह है कि कुछ लोग स्वयं को धर्म का ठेकेदार समझने लगते हैं। वे दूसरों को बताते फिरते हैं कि कौन कितना धार्मिक है, किसकी पूजा सही है, किसका व्रत श्रेष्ठ है, कौन किस परंपरा का पालन कर रहा है और किसे समाज में कितना सम्मान मिलना चाहिए। वे अपने मत और मान्यता को ही अंतिम सत्य मानते हैं। जैन दर्शन का अनेकांतवाद हमें सिखाता है कि सत्य को समझने के लिए अनेक दृष्टिकोणों का सम्मान करना आवश्यक है। किसी एक दृष्टिकोण को ही पूर्ण सत्य मानकर दूसरों को गलत ठहराना उचित नहीं है। जो व्यक्ति हर समय दूसरों की कमियाँ खोजता है, उसे कभी अपने भीतर झाँकने का अवसर ही नहीं मिलता। धार्मिकता का अर्थ दूसरों को नीचा दिखाना नहीं, बल्कि स्वयं को बेहतर बनाना है। हमें यह अधिकार नहीं कि हम किसी के माथे पर धार्मिक या अधार्मिक होने का स्थायी ठप्पा लगा दें।

9. अहिंसा केवल भोजन की थाली तक सीमित नहीं: जैन समाज में अहिंसा का विशेष महत्त्व है। शाकाहार, जीवदया, जल छानना, रात्रि भोजन का त्याग और अनेक प्रकार के संयम सराहनीय धार्मिक अनुशासन हैं। लेकिन हमें अहिंसा का व्यापक अर्थ भी समझना होगा। किसी को अपमानित करना, किसी की प्रतिष्ठा को जानबूझकर ठेस पहुँचाना, झूठे आरोप लगाना, किसी के परिवार में कलह उत्पन्न करना, कमजोर व्यक्ति का आर्थिक शोषण करना और किसी की मजबूरी का लाभ उठाना भी हिंसक प्रवृत्तियाँ हैं। अहिंसा का वास्तविक अर्थ है-हमारे विचार, वाणी और कर्म किसी दूसरे के लिए अनावश्यक पीड़ा का कारण न बनें। केवल भोजन की शुद्धता ही नहीं, विचारों और व्यवहार की शुद्धता भी आवश्यक है।

10. चार कषाय - धार्मिक पाखंड की जड़: जैन दर्शन में क्रोध, मान, माया और लोभ को चार प्रमुख कषाय माना गया है। यही वे आंतरिक विकार हैं जो व्यक्ति को धर्म के वास्तविक मार्ग से भटकाते हैं। क्रोध व्यक्ति को दूसरों का अपमान करने के लिए प्रेरित करता है। मान उसे पद, प्रतिष्ठा और सम्मान का भूखा बनाता है। माया उसे छल-कपट और दोहरे व्यवहार की ओर ले जाती है। लोभ उसे धन, संपत्ति और अधिकारों के पीछे अंधा बना देता है। यदि कोई व्यक्ति इन चार कषायों को अपने भीतर बनाए रखते हुए प्रतिदिन धार्मिक अनुष्ठान करता है, तो उसे अपने धार्मिक जीवन की दिशा पर विचार करना चाहिए।

11. धर्म का वास्तविक स्वरूप - आचरण में दिखाई देना चाहिए: धर्म का सबसे सुंदर रूप हमारे दैनिक जीवन में दिखाई देना चाहिए। यदि हम व्यापारी हैं, तो हमारा व्यापार ईमानदार होना चाहिए। यदि हम अधिकारी हैं, तो हमारा व्यवहार न्यायपूर्ण होना चाहिए। यदि हम समाज के पदाधिकारी हैं, तो हमारे निर्णय निष्पक्ष होने चाहिए। यदि हम परिवार के मुखिया हैं, तो हमारा आचरण प्रेमपूर्ण और जिम्मेदार होना चाहिए। यदि हम दानदाता हैं तो हमारा दान निःस्वार्थ होना चाहिए। यदि हम धार्मिक प्रवचन सुनते हैं, तो उसका कुछ प्रभाव हमारे व्यवहार में अवश्य दिखाई देना चाहिए। एक सच्चा धार्मिक व्यक्ति किसी की मजबूरी का लाभ नहीं उठाता, किसी का अपमान नहीं करता, किसी की सफलता से ईर्ष्या नहीं करता और किसी की असफलता पर प्रसन्न नहीं होता। वह दूसरों के प्रति वही व्यवहार करता है जिसकी अपेक्षा वह स्वयं अपने लिए करता है।

12. समाज को अब आत्ममंथन करना होगा: धार्मिक पाखंड केवल व्यक्ति की समस्या नहीं है। जब समाज दिखावे को सम्मान और सादगी को कमजोरी समझने लगता है, तब यह प्रवृत्ति सामूहिक रूप से बढ़ती है। यदि किसी व्यक्ति को उसके दान की राशि, महँगे आयोजन और बड़े पद के कारण अधिक महत्व दिया जाता है, जबकि ईमानदार, सेवाभावी और चरित्रवान व्यक्ति को पीछे रखा जाता है, तो समाज स्वयं इस दिखावे को प्रोत्साहित कर रहा है। हमें अपने सामाजिक मानदंड बदलने होंगे।

धार्मिक संस्थाओं में पारदर्शिता होनी चाहिए। दान और चढ़ावे का उपयोग शिक्षा, चिकित्सा, जीवदया, जरूरतमंदों की सहायता और समाज के स्थायी विकास में होना चाहिए।

पदाधिकारियों का चयन केवल आर्थिक योगदान और व्यक्तिगत प्रभाव के आधार पर नहीं, बल्कि उनकी ईमानदारी, कार्यक्षमता, सेवा भावना और निष्पक्षता के आधार पर होना चाहिए। समाज में ऐसे लोगों का सम्मान होना चाहिए जो चुपचाप सेवा करते हैं, न कि केवल वे जो मंच पर सबसे अधिक दिखाई देते हैं।

13. समाधान - धार्मिकता को प्रदर्शन नहीं, जीवन का संस्कार बनाइए: इस समस्या का समाधान किसी दूसरे की आलोचना करने में नहीं, बल्कि स्वयं से शुरुआत करने में है। इसके लिए कुछ व्यावहारिक कदम आवश्यक हैं।

पहला-प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण करें। दिन समाप्त होने पर स्वयं से पूछें कि आज मैंने किसका दिल दुखाया, कहाँ असत्य बोला, कहाँ अहंकार दिखाया और किसकी सहायता कर सकता था। यह आत्मनिरीक्षण किसी भी बाहरी अनुष्ठान से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

दूसरा-धर्म को व्यवहार से जोड़ें। मंदिर में पूजा करने के साथ घर, कार्यालय, व्यापार और समाज में भी धर्म का पालन करें। सत्य, अहिंसा, ईमानदारी और करुणा को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाइए।

तीसरा-दान को गोपनीय और उपयोगी बनाइए। नाम, प्रचार और सम्मान की अपेक्षा के बिना जरूरतमंदों की सहायता कीजिए। किसी गरीब बच्चे की शिक्षा, किसी बीमार व्यक्ति का उपचार और किसी बेरोजगार युवक को रोजगार दिलाना भी महान सेवा है। चौथा-पद और प्रतिष्ठा की लालसा छोड़िए। धार्मिक संस्थाओं में पद सेवा का माध्यम होना चाहिए, व्यक्तिगत प्रभाव बढ़ाने का साधन नहीं। जो पद मिलने पर प्रसन्न और पद न मिलने पर नाराज हो जाए, उसे अपने उद्देश्य पर विचार करना चाहिए।

पाँचवाँ-वाणी में अहिंसा अपनाइए। किसी को अपमानित करने, नीचा दिखाने और कटु टिप्पणी करने से बचिए। असहमति हो सकती है, लेकिन असम्मान नहीं होना चाहिए। छठा-युवाओं को वास्तविक धर्म सिखाइए। उन्हें केवल पूजा-पाठ और परंपराएँ ही नहीं, बल्कि सत्यनिष्ठा, अनुशासन, करुणा, अपरिग्रह, सहिष्णुता और सामाजिक जिम्मेदारी भी सिखाइए। सातवाँ-साधु-संतों के उपदेशों को जीवन में उतारिए। प्रवचन सुनने के बाद केवल प्रशंसा न करें, बल्कि एक अच्छी बात चुनकर उसे अपने जीवन में लागू करें।

शेष पृष्ठ 8 पर....

शेष पृष्ठ 7 का...

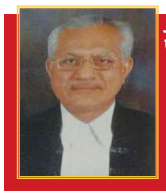
आठवाँ-दूसरों को सुधारने से पहले स्वयं को सुधारें। धर्म का पहला प्रयोग स्वयं पर होना चाहिए। दूसरों के दोष गिनने से आत्मा का कल्याण नहीं होता।

14. नई पीढ़ी को धर्म का कौन-सा स्वरूप दिखा रहे हैं?: आज की नई पीढ़ी बहुत कुछ देख रही है। वह देखती है कि बड़े-बड़े धार्मिक उपदेश देने वाले लोग आपस में किस प्रकार व्यवहार करते हैं। वह देखती है कि समाज में पद और प्रतिष्ठा के लिए कितनी प्रतिस्पर्धा होती है। वह यह भी देखती है कि दान और सेवा के नाम पर कितनी पारदर्शिता है। यदि हम युवाओं को अहिंसा सिखाएँ और स्वयं कटुता फैलाएँ, सत्य सिखाएँ और स्वयं झूठ बोलें, अपरिग्रह सिखाएँ और स्वयं प्रतिष्ठा के पीछे भागें, तो हमारी शिक्षा का प्रभाव कैसे पड़ेगा? बच्चे और युवा हमारे उपदेशों से अधिक हमारे आचरण से सीखते हैं। इसलिए हमें ऐसी धार्मिक संस्कृति विकसित करनी होगी जहाँ सफलता का पैमाना धन और दिखावा नहीं, बल्कि चरित्र और सेवा हो।

15. अंत में - भगवान को दिखावा नहीं, भाव चाहिए: हमें यह समझना होगा कि धर्म किसी प्रतियोगिता का नाम नहीं है। यह न तो दूसरों से आगे निकलने का माध्यम है, न ही समाज में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने का साधन। धर्म स्वयं को जानने, अपने विकारों को पहचानने और उन्हें दूर करने की सतत प्रक्रिया है। भगवान के सामने महँगी पूजा-सामग्री रखने से अधिक महत्वपूर्ण है अपने मन से द्वेष निकालना। मंदिर में दीपक जलाने से अधिक आवश्यक है किसी निराश व्यक्ति के जीवन में आशा का दीप जलाना। किसी धार्मिक आयोजन में बड़ी राशि देने से अधिक महत्वपूर्ण है किसी जरूरतमंद की पीड़ा को समझना। माला के मनके गिनने से अधिक आवश्यक है अपने मन के विकारों को कम करना। क्षमावाणी पर संदेश भेजने से अधिक आवश्यक है उस व्यक्ति को वास्तव में क्षमा करना जिससे हमारा मनमुटाव है और सबसे महत्वपूर्ण बात, दूसरों को धर्म का पाठ पढ़ाने से पहले स्वयं अपने आचरण की परीक्षा लेना आवश्यक है। धर्म का अर्थ यह नहीं कि दुनिया हमें धार्मिक माने, धर्म का अर्थ यह है कि हमारा अंतर्मन हमारे आचरण से संतुष्ट हो।

एक प्रसिद्ध संस्कृत सुभाषित है ''परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः। परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम'' अर्थात वृक्ष, नदियाँ और गायें दूसरों के उपकार के लिए हैं; इसी प्रकार यह शरीर भी परोपकार के लिए है। यही भावना धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने की कुंजी है। अंत में समाज के प्रत्येक व्यक्ति से कुछ प्रश्न हैं-क्या हमारी पूजा ने हमारा क्रोध कम किया? क्या हमारे व्रतों ने हमारे लोभ को घटाया? क्या हमारे प्रवचनों ने हमारी वाणी को मधुर बनाया? क्या हमारे दान ने किसी जरूरतमंद के जीवन में परिवर्तन लाया? क्या हमारे धार्मिक आयोजनों ने समाज में एकता बढ़ाई? यदि इन प्रश्नों के उत्तर सकारात्मक हैं, तो हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन यदि वर्षों की धार्मिक गतिविधियों के बाद भी हमारा अहंकार, क्रोध, छल, लोभ और द्वेष पहले जैसा ही है, तो हमें रुककर अपने भीतर झाँकने की आवश्यकता है। याद रखिए, माथे का तिलक लोगों को दिखाई देता है, लेकिन मन का तिलक केवल आचरण से दिखाई देता है। हाथ की माला गिनी जा सकती है, लेकिन मन के विकारों को गिनकर कम करना ही सच्ची साधना है। मंदिर में झुकना सरल है, अहंकार को झुकाना कठिन है। और जो व्यक्ति अपने अहंकार को झुका लेता है, वही धर्म के वास्तविक मार्ग पर चलना शुरू करता है। हमें धार्मिक होने का अभिनय नहीं करना है, बल्कि अपने जीवन को इतना निर्मल बनाना है कि हमें धार्मिक होने का प्रमाण देने की आवश्यकता ही न पड़े। क्योंकि अंततः मनुष्य की पहचान उसके माथे पर लगे तिलक से नहीं, बल्कि उसके कर्मों से होती है। धर्म का वास्तविक सौंदर्य मंदिरों की भव्यता में नहीं, बल्कि मनुष्य के निर्मल चरित्र में बसता है।

मोक्षमार्ग में साधक संयम का उपकरण है पिच्छिका



सुधांशु कासलीवाल,
अध्यक्ष
श्री अतिशय क्षेत्र,
श्री महावीर जी

जिस प्रकार से मोक्ष मार्ग तीन के मेल संयोग से बनता है। सम्यदर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चारित्र तीनों की एकता का नाम मोक्ष मार्ग है। जिस तरह तीनों की एकता से मोक्षमार्ग बनता है बस उसी प्रकार मोक्षमार्ग में साधक संयम का उपकरण पिच्छिका भी तीन के संयोग से बनती है। पिच्छि तीन वस्तु के मेल संयोग से बनती है। डंडी, रस्सी और पंख तीनों में से एक भी कम होने पर पिच्छिका नहीं बन सकती। जिस प्रकार मोक्षमार्ग में सम्यदर्शन मूल है उसी प्रकार पिचिका में डंडी मूल है। जिस प्रकार सम्यक् दर्शन के बिना मोक्षमार्ग नहीं बन सकता उसी प्रकार डंडी के बिना पिच्छिका नहीं बन सकती। डंडी सम्यकदर्शन का प्रतीक है, रस्सी सम्यक्ज्ञान का प्रतीक है। और पंख सम्यक्चारित्र के प्रतीक है। एक पिच्छी बारह गुच्छे (वंच) जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए बारह भावनाओं का स्मरण दिलाते हैं। वृति श्रावक के लिए बारह वृतों का स्मरण दिलाते हैं। मुनियों के लिए बारह तपों का स्मरण कराते हैं। संसारी जन के लिए बारह माह का स्मरण दिलाते है और भव्य जनों के लिए समवशरण श्री मंडप भूमि में स्थित बारह सभाओं को स्मरण कराते हैं। जिस तरह समवशरण में बारह सभाऐं होती है उसी तरह पिच्छिका में बारह पंच होते हैं।

एक पंच में साठ पंख होते हैं। 60 को बारह से गुणा करने पर 720 पंख होते हैं। उसी तरह 30 चौबीसी मे 720 तीर्थंकर होते हैं। अर्थात् एक एक पंख एक एक तीर्थंकर का स्मरण दिलाता है। इस तरह से पिच्छिका के विषय में विचार करना चाहिए। साधुओं की पिच्छी तीर्थंकर भगवान की ध्वज है जिसके द्वारा जिन धर्म की प्रभावना करते हैं। यदि पिच्छिका को उल्टा पकड़ा जाये, पंख ऊपर रखें और डंडी को नीचे करें तब कल्पवृक्ष के समान प्रतीत होती है। जिस प्रकार कल्पवृक्ष लोगों को मनचाही वस्तु प्रदान करता है। वस्तु पिच्छि रूपी कल्पवृक्ष तो बिना मांगे सब कुछ प्रदान कर देता है। पिच्छिधारियों को देखकर सब अपने आप नतमस्तक हो जाते हैं। सभी नमोस्तु नमोस्तु शब्द का उच्चारण करने लगते हैं। सभी आदर की दृष्टि से देखने लगते हैं। पिच्छी निर्बधता का चिन्ह है। पिच्छी का चमत्कार किसी से छुपा हुआ नहीं है। जिस समय गिरनार में आचार्य कुन्द कुन्द स्वामी के साथ श्वेताम्बर साधुओं के साथ विवाद हुआ कि पहले वन्दना हम करें क्योंकि आदि धर्म श्वेताम्बर है। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी का कहना था आदि धर्म दिगम्बर है। पहले वन्दना करने का अधिकार दिगम्बरों का है, श्वेतम्बरों का नहीं है। काफी समय तक विवाद चलता रहा अन्त में निर्णय हुआ कि पर्वत के मार्ग में जो अम्बिका देवी की प्रतिमा है वह निर्णय करेगी कि आदि धर्म दिगम्बर है कि श्वेताम्बर है, दोनों संघों के साथ गये। श्वेताम्बर साधुओं ने उस अम्बिका देवी की खूब पूजा की, खूब सम्मान किया परन्तु देवी की तरफ से कोई भी प्रक्रिया नहीं हुई तब आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने देवी को पिच्छिका लगाई और कहा बोलो देवी आदि दिगम्बर या आदि श्वेताम्बर, आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी का आशीर्वाद प्राप्त होते ही उस पत्थर की अम्बिका देवी के अन्दर से आवाज निकली आदि दिगम्बर, आदि दिगम्बर, आदि दिगम्बर इस प्रकार शब्द नाद होने पर सर्वप्रथम आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने सर्वप्रथम गिरनार जी की संघ सहित वन्दना की, देखो पिच्छिका का अतिशय पत्थर की प्रतिमा भी बोल पड़ी। यह पिच्छी कल्पवृक्ष के समान है। भोग भूमि में मात्र दस ही प्रकार की वस्तुएं प्रदान करती है और वे दस प्रकार के कल्पवृक्ष भोगोपभोग की वस्तुएं देती है। भोग भूमि में दस प्रकार के कल्पवृक्ष हैं परन्तु पिच्छि में बारह कल्पवृक्ष होते हैं। अतः एक पिच्छि में बारह गुच्छे होते हैं वे बारह गुच्छे ही बारह कल्पवृक्षों के समान है। पिच्छि रूपी कल्पवृक्ष संसार को बढ़ाने वाली वस्तुएं नही देती हैं अतः संसार को नाश करने की वस्तुए प्रदान करती हैं। पिच्छि संयम का उपकरण है। इसे संयम वृक्ष भी कहते हैं। जिस प्रकार से वृक्ष फल देता है, छाया देता है उसी प्रकार से ये पिच्छि सुख शान्ति की छाया देती है और मोक्ष रूपी फल के लिए प्रदान करती है। कल्पवृक्ष तो याचना करने पर देता है। पर संयम वृक्ष अर्थात पिच्छि बिना याचना किये बिना ही देता है। मयूर पंख से बनी पिच्छि की जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है। आगम में पिच्छि रखने का विधान किस प्रकार से किया है इस व्यवस्था को भी समझें। पिच्छि तो पिच्छि ही है, संयम का उपकरण है, इसके रखने से नियम इस प्रकार से है- जो निर्दोष साधु होते हैं अर्थात् अपराध से रहित होते हैं वे साधु डंडी को आगे करके और पंखों को पीछे करके पिच्छि को रखते हैं। परन्तु जब कोई साधु भारी अपराध करता तब उसके अपराध की सूचना पिच्छि सूचित करती है। अपराधी साधु डंडी को पीछे करता है और पंखों को आगे रखकर के बैठता है। वह सबको पिच्छि को उठा करके नमस्कार करता है परन्तु उस साधु को ज्येष्ठ साधु प्रति नमोस्तु नहीं करते हैं और छोटे साधु नमोस्तु नहीं करते हैं और पिच्छि निर्दोषता की भी सूचना देती है। पिच्छी अपराध की भी सूचना देती है। इस प्रकार से जब तक साधु जीवंत व निर्दोष होता है तब वह डंडी को आगे कर के पिच्छि को रखते हैं परन्तु जब साधु की समाधि हो जाती है तब भी पिच्छी उल्टी रखी जाती है अर्थात् डंडी को आगे और पिच्छी के पंखों को आगे करके रखी जाती है।



अहिंसा के संदेश और साधना की गाथा-विश्व अहिंसा दिवस पर आचार्य विमलसागर जी का स्मरण

शेखर चंद पाटनी,
राष्ट्रीय संवाददाता



नेमी नगर जैन कॉलोनी, इंदौर। अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले, सत्य का पाठ पढ़ाने वाले और अणुव्रतों के पालन का संदेश देने वाले महात्मा गांधीजी ने देश को वर्षों की गुलामी से स्वतंत्र कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित अहिंसा के सिद्धांत को महात्मा गांधीजी ने व्यावहारिक जीवन में उतारकर समाज के सामने उसका प्रभावी उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका जीवन अहिंसा, सत्य और संयम की शक्ति का अद्भुत उदाहरण रहा।

इसी क्रम में आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की जन्म तिथि पर उनके विलक्षण व्यक्तित्व और तपस्वी जीवन का स्मरण किया गया। कहा जाता है -''सागर में से तो बहुत-सी कटोरियाँ भर जाती हैं, लेकिन विमलसागर एक ऐसे अद्भुत संत थे, जो कटोरी से निकले।'' उनकी माता का नाम कठोरी बाई था। इसी संदर्भ में उनके जीवन से जुड़ा यह प्रसंग उनके व्यक्तित्व को और भी विशिष्ट बनाता है। आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज ने अपने जीवन को धर्म, साधना और जनजागरण के लिए समर्पित किया। वे देश की तीन परिक्रमा करने वाले प्रथम साधु के रूप में भी स्मरण किए जाते हैं। उनके व्यापक विहार ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में जैन धर्म, अहिंसा, संयम और आध्यात्मिक चेतना का संदेश पहुँचाया।

उनका जीवन केवल साधना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने अपने आचरण और विहार के माध्यम से धर्म को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। तप, त्याग, संयम और आत्मसाधना से परिपूर्ण उनका जीवन आज भी साधु-संतों और श्रावक समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है। जीवन की अंतिम अवस्था में आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज ने सम्मेद शिखर जी की पावन भूमि पर उत्तम समाधिमरण प्राप्त किया। उनका संपूर्ण जीवन साधना की उस यात्रा का प्रतीक रहा, जिसमें जन्म से लेकर अंतिम क्षण तक आत्मकल्याण और धर्म प्रभावना ही केंद्र में रही। आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की जन्म तिथि पर उनके चरणों में विनम्र श्रद्धांजलि एवं नमन।

आशियाना में उपाध्याय विहसंत सागरजी के चातुर्मास का हुआ समापन

सिद्धार्थ जैन, मीडिया प्रभारी



लखनऊ, 9 नवंबर 2026। आशियाना दिगंबर जैन मंदिर में सोमवार को पूज्य उपाध्याय श्री 108 विहसंत सागर जी महाराज के सान्निध्य में चल रहे चातुर्मास का भव्य समापन समारोह श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ। भगवान महावीर के मोक्ष कल्याणक एवं कार्तिक अमावस्या के पावन अवसर पर मंदिर में विशेष धार्मिक आयोजन किए गए। इस अवसर पर गुरुवर ने अपने मंगल प्रवचन में बताया कि कार्तिक अमावस्या के दिन भगवान महावीर स्वामी ने बिहार के पावापुरी से मोक्ष प्राप्त किया था। इसी पावन स्मृति में जैन धर्म में दीपावली मनाने की परंपरा प्रारंभ हुई। इस दिन जैन धर्मावलंबी भगवान महावीर के चरणों में श्रद्धापूर्वक निर्वाण लाडू समर्पित करते हैं। साथ ही, जिन स्थानों पर जैन साधु-संतों के चातुर्मास चल रहे होते हैं, वहां चातुर्मास निष्ठापन समारोह आयोजित किया जाता है। इसके साथ ही साधु-संत चातुर्मास काल से निवृत्त हो जाते हैं। समारोह के दौरान मंदिर के अध्यक्ष श्री चंद्रप्रकाश जैन ने चातुर्मास के अंतर्गत आयोजित विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने पूरे चातुर्मास के दौरान जाने-अनजाने में हुई किसी भी भूल के लिए समाज की ओर से क्षमायाचना की तथा गुरुवर के श्रीचरणों में भी क्षमा भाव अर्पित किया। मीडिया प्रभारी सिद्धार्थ जैन ने बताया कि भगवान महावीर के समक्ष निर्वाण लाडू समर्पित करने का सौभाग्य अविनाश जैन, सावित्री जैन एवं आभा जैन (कृष्णानगर) को प्राप्त हुआ। 11 से 16 नवंबर तक आशियाना जैन मंदिर में नवनिर्मित भव्य मानस्तंभ की प्राण-प्रतिष्ठा का आयोजन पूज्य उपाध्याय श्री 108 विहसंत सागर जी महाराज के सान्निध्य में चल रहा है। इस मानस्तंभ में 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएं विराजमान हो रहीं हैं। छह दिवसीय इस महोत्सव में लखनऊ सहित उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से बड़ी संख्या में जैन समाज के श्रद्धालु शामिल हुये। कार्यक्रम में मुख्य रूप से मंदिर अध्यक्ष चंद्रप्रकाश जैन, अखिलेश जैन, अजय जैन, मनोज जैन, शरद जैन, नलिन राज जैन, अनूप जैन, राजू जैन सहित समाज के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक पर पालम विहार जैन मंदिर में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ अर्पित किया गया निर्वाण लाडू

पालम विहार, गुरुग्राम। कार्तिक कृष्ण अमावस्या की पावन प्रत्यूष बेला में भगवान महावीर स्वामी के 2553वें निर्वाण कल्याणक के पावन अवसर पर श्री 1008 भगवान महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, पालम विहार में अपार श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक उल्लास के साथ निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। इस पावन अवसर पर सकल जैन समाज ने सामूहिक रूप से भगवान के चरणों में निर्वाण लाडू समर्पित कर आत्मकल्याण, कर्मनिर्जरा एवं मोक्षमार्ग पर अग्रसर होने की मंगल भावना व्यक्त की।

प्रातःकाल से ही मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं का आगमन प्रारंभ हो गया था। देखते ही देखते संपूर्ण जिनालय भक्तों की उपस्थिति से भक्तिमय हो उठा। श्रद्धालुओं के चेहरों पर प्रसन्नता, हृदय में असीम श्रद्धा और मन में भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव के प्रति विशेष उत्साह एवं समर्पण का भाव स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

इस पावन अवसर पर श्रद्धालुओं ने भगवान महावीर स्वामी के समक्ष निर्वाण लाडू अर्पित करते हुए भावपूर्ण प्रार्थना की कि हे प्रभु! जिस प्रकार आपने समस्त कर्मों का क्षय कर जन्म-मरण के अनंत चक्र से मुक्त होकर सिद्धपद प्राप्त किया, उसी प्रकार हमें भी आपके बताए अहिंसा, संयम और आत्मकल्याण के मार्ग पर चलने की शक्ति एवं सद्बुद्धि प्रदान करें। हमारे जीवन से राग-द्वेष, मोह, अहंकार एवं कषायों का क्षय हो तथा हम आत्मा के शुद्ध स्वरूप को पहचानकर मोक्षमार्ग की दिशा में आगे बढ़ सकें। कार्यक्रम के समस्त मांगलिक अनुष्ठानों का शुभारंभ विद्वान पंडित श्री संतोष जी शास्त्री के सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में हुआ। उनके कुशल निर्देशन में भगवान का अभिषेक, शांतिधारा, पूजन एवं निर्वाण लाडू अर्पण सहित सभी धार्मिक क्रियाएं विधिपूर्वक एवं पूर्ण मर्यादा के साथ संपन्न हुईं। उन्होंने उपस्थित श्रद्धालुओं को भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक के आध्यात्मिक महत्व से अवगत कराते हुए आत्मशुद्धि, संयम,



अहिंसा, अपरिग्रह एवं कर्मनिर्जरा के सिद्धांतों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम के दौरान मंदिर परिसर में भक्ति, श्रद्धा एवं आध्यात्मिक ऊर्जा का अद्भुत वातावरण बना रहा। यह आयोजन मात्र एक धार्मिक परंपरा का निर्वहन नहीं, बल्कि भगवान महावीर के महान उपदेशों को अपने जीवन में आत्मसात करने और उनके बताए मोक्षमार्ग पर चलने का सामूहिक संकल्प भी था। भगवान महावीर का जीवन और उनका संदेश संपूर्ण मानव समाज को अहिंसा, अनेकांतवाद, अपरिग्रह, करुणा एवं आत्मसंयम की प्रेरणा देता है।

इस भव्य एवं वार्षिक धार्मिक आयोजन को सफल, सुव्यवस्थित एवं गरिमामय बनाने में संस्थान की कार्यकारिणी के पथप्रदर्शक श्री राकेश कुमार जैन, अध्यक्ष श्री विपिन कुमार जैन, उपाध्यक्ष श्री पंकज जैन, महामंत्री श्री गौरव जैन, सचिव श्री मुकेश जैन, कोषाध्यक्ष श्री अशोक जी गंगवाल तथा कार्यकारिणी सदस्य श्री विकास जी जैन एवं श्री नीरज जी जैन का विशेष योगदान रहा।

इसके साथ ही मंदिर की साज-सज्जा एवं आकर्षक रंगोली निर्माण में समाज की महिला शक्ति ने भी अत्यंत सराहनीय सहभागिता निभाई। विशेष रूप से श्रीमती मोनिका जैन, यशिका जैन, मेघा जैन, सुचित्रा जैन एवं नविता जैन सहित अन्य महिलाओं का योगदान उल्लेखनीय रहा। सभी सदस्यों की सामूहिक सहभागिता एवं समर्पण ने आयोजन की भव्यता में विशेष आध्यात्मिक सौंदर्य जोड़ दिया। अंततः यह पावन आयोजन समस्त समाज के लिए आत्मचिंतन, आत्मशुद्धि एवं मोक्षमार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा बनकर संपन्न हुआ। भगवान महावीर का निर्वाण कल्याणक हमें स्मरण कराता है कि प्रत्येक आत्मा का वास्तविक स्वरूप शुद्ध, बुद्ध एवं अनंत गुणों से परिपूर्ण है। कर्मों के बंधन से मुक्त होकर परम शांति एवं सिद्धत्व प्राप्त करना ही आत्मा का सर्वोच्च लक्ष्य है।

श्रद्धा, भक्ति, अनुमोदना एवं आत्मकल्याण की मंगल भावना के साथ सकल जैन समाज ने भगवान महावीर स्वामी के चरणों में कोटिशः नमन करते हुए उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

- वर्धमान आध्यात्मिक संस्थान (रजि.), पालम विहार, गुरुग्राम

जयपुर की पावन धरा पर होने जा रही ऐतिहासिक जैनेश्वरी दीक्षा की तैयारी



परम पूज्य पट्टाचार्य भगवंत श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में एवं परम पूज्य श्रुतसंवेगी महाश्रमण श्री 108 आदित्य सागर जी मुनिराज के पावन करकमलों से आगामी 16 दिसंबर 2026 को जैनेश्वरी दीक्षा धारण करने जा रहे बाल ब्रह्मचारी अतिशय भैया जी, विशाल भैया जी एवं रोहित भैया जी ने पुष्पगिरि जैन तीर्थ में विराजमान परम पूज्य अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी महाराज के दर्शन कर उनका मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्य आचार्य भगवंत ने तीनों भावी मुनिराजों को वात्सल्यपूर्ण स्नेह एवं मंगल आशीर्वाद प्रदान कर उनके संयम पथ की मंगलमय अनुमोदना की। यह केवल तीन व्यक्तियों का वैराग्य नहीं, बल्कि संसार के मोह-ममता के बंधनों को त्यागकर आत्मकल्याण एवं मोक्षमार्ग की ओर बढ़ने का एक अनुपम उदाहरण है। निःसंदेह, '16 दिसंबर 2026' को जयपुर की पावन धरा पर एक ऐतिहासिक स्वर्णिम अध्याय लिखा जाएगा, जिसकी गूंज युगों-युगों तक जिनशासन की प्रभावना करती रहेगी। आयोजक - श्री आदित्य प्रेरणा मंच, जयपुर निवेदक - सकल दिगंबर जैन समाज, जयपुर, राजस्थान तीनों भावी मुनिराजों के वैराग्य भाव की अनुमोदना करते हुए उनके संयम जीवन की मंगलकामना करें।

महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव पर दुर्ग भिलाई के जैन मंदिरों में हुए आयोजन

भिलाई। कार्तिक कृष्ण अमावस्या पर पूरे देश में बड़ी श्रद्धा और धूमधाम से भगवान महावीर स्वामी का 2553वां निर्वाणोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, नेहरू नगर सहित दुर्ग-भिलाई अंचल के सभी दिगंबर व श्वेतांबर जैन मंदिरों में सोमवार को विशेष पूजा की गई। मंदिरों में अभिषेक, शांतिधारा और निर्वाण कांड का पाठ हुआ।

जैन परंपरा के अनुसार भगवान के मोक्षकल्याणक महोत्सव में निर्वाण लाडू (मोदक) चढ़ाया जाता है। इसी तिथि पर भगवान महावीर ने पावापुरी में निर्वाण प्राप्त किया था। मान्यता है कि इसी रात प्रथम गणधर गौतम स्वामी को कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ था, इसलिए जैन समाज के लिए ये सबसे बड़ा पर्व है। इस दिन से वीर निर्वाण संवत् 2553 की शुरुआत भी हुई है।

विधानाचार्य पं. अनेकांत शास्त्री ने बताया कि जयकारों के बीच श्रावकों ने भगवान के श्री चरणों में निर्वाण लाडू अर्पित कर विश्व शांति, सुख-समृद्धि और अहिंसा के प्रसार की भावना भाई। मंदिरों में भगवान महावीर के जीवन दर्शन पर प्रवचन भी हुए। वक्ताओं ने कहा कि भगवान महावीर ने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का संदेश दिया। आज के समय में उनके सिद्धांत और भी अधिक प्रासंगिक हैं। शाम को मंदिरों और घरों में दीप जलाकर दीपोत्सव मनाया गया।

मुनि आगम सागर ससंघ का मंगल प्रवेश नेहरू नगर मंदिर में: चातुर्मास में 2 मुनिसंघ की सेवा के बाद चातुर्मास निष्ठापन कर राजधानी रायपुर से विहार कर आचार्य विद्यासागर महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि 108 आगमसागर ससंघ का मंगल प्रवेश नेहरू नगर में बुधवार सुबह 8 बजे कोसा नाला टोल से अगवानी के रूप में होने जा रहा हैं। मुनि 108 आगमसागर महाराज, पुनीतसागर महाराज, ऐलक धैर्यसागर महाराज एवं स्वागत सागर महाराज का सानिध्य सुबह 9 बजे नेहरू नगर मंदिरजी में होगा।

जैन धर्मावलंबियों का नया साल हुआ शुरु

वीर निर्वाण सम्वत् 2553 का हुआ शुभारंभ-जैन संतों का चातुर्मास का हुआ निष्ठापन

विनोद जैन कोटखावदा

जयपुर, 10 नवम्बर। सबसे प्राचीन संवत जैन धर्मावलम्बियों का नया साल वीर निर्वाण सम्वत् 2553 का कार्तिक शुक्ला एकम् मंगलवार, 10 नवम्बर से शुभारंभ हुआ। इस मौके पर जैन मंदिरों में पूजा अर्चना के विशेष आयोजन किये गये। नये साल की जैन धर्मावलंबियों ने आपस में एक दूसरे को बधाई दी।

राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि इससे पूर्व वीर निर्वाण सम्वत् 2552 का कार्तिक कृष्ण अमावस्या, सोमवार, 9 नवम्बर को समापन हो गया।



श्री जैन के मुताबिक इसी दिन जयपुर में चल रहे 15 चातुर्मास स्थलों पर दिगम्बर जैन आचार्यों, मुनि, आर्यिकाओं, क्षुल्लक, क्षुल्लिकाओं के चातुर्मास का निष्ठापन एवं वर्षायोग का समापन हुआ। कई स्थानों पर समारोह आयोजित किए गए।

श्री जैन के मुताबिक इसी दिन आचार्य भरत सागर महाराज का 20 वां समाधि दिवस एवं सायंकाल भगवान महावीर के प्रथम गणधर गौतम स्वामी का केवलज्ञान दिवस मनाया गया।

इस मौके पर कई साधु संतों द्वारा संयम का उपकरण पिच्छिका परिवर्तन भी किया गया।

पंचतीर्थों की यात्रा



सनावद। बिहार के जैन सिद्धक्षेत्रों में पंचतीर्थ प्रसिद्ध हैं। श्री सम्मेद शिखर जी की धार्मिक यात्रा के बाद यात्रीगण इन तीर्थों की यात्रा कर पुण्य लाभ लेते हैं। पार्श्व ज्योति मंच के सदस्यों ने शुक्रवार को इन तीर्थों के दर्शन वंदन कर अक्षय पुण्यबंध किया। शुभम जैन ने बताया कि डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, प्रियम जैन, शौर्यम जैन, शौरांश जैन, सन्ध्या जैन, वीनस जैन ने मंदारगिरि, चम्पापुर, कुण्डलपुर, पावापुर राजगृही, गुणावा, नवादा आदि सिद्धक्षेत्रों की वंदना की। प्रियम जैन ने चम्पापुर निर्वाण क्षेत्र पर स्थित लगभग 4000 वर्ष पुरानी भगवान वासुपूज्य स्वामी का जलाभिषेक, शांतिधारा कर पुण्यार्जन किया। यहाँ से भगवान वासुपूज्य स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया था तथा मंदारगिरि पर्वत पर तपस्या कर केवलज्ञान प्राप्त किया था। पावापुरी से भगवान महावीर स्वामी ने दीपावली के दिन मोक्ष प्राप्त किया था अतः हजारों की संख्या में लोग इन तीर्थों की वंदना अवश्य करते हैं।

स्वर्गीय रमेशचंद जैन के देहदान से जागी नई अलख, 15 परिवारों ने लिया देहदान का संकल्प

लोनारा में 10 और बामंदी में 5 लोगों ने किया देहदान का संकल्प, तेरहवीं पर 30 यूनिट रक्तदान, 50 विद्यार्थियों को स्वेटर वितरण, गौशाला, मंदिर, सामाजिक संस्थाओं को 51 हजार का दान और ग्रामवासियों के लिए अन्नदान

राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद



लोनारा। किसी व्यक्ति का जीवन समाप्त होने के बाद भी उसके विचार और सेवा भावना समाज को नई दिशा दे सकते हैं। इसका जीवंत उदाहरण लोनारा ग्राम के प्रथम देहदानी स्वर्गीय रमेशचंद जैन ने प्रस्तुत किया है। उनके देहदान के बाद क्षेत्र में देहदान के प्रति ऐसी जागरूकता आई कि अब देहदान करने वालों का सिलसिला शुरू हो गया है। उनकी तेरहवीं के अवसर पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में उनके सुपुत्र आशीष जैन एवं पौत्र शाश्वत जैन ने भी देहदान का संकल्प लिया। वहीं लोनारा ग्राम के कुल 10 तथा समीपस्थ ग्राम बामन्दी के पांच लोगों ने भी मृत्यु उपरांत देहदान का संकल्प लेकर मानवता की सेवा का अनुकरणीय निर्णय लिया। इस प्रकार रमेशचंद जैन के एक निर्णय ने अनेक लोगों को मृत्यु के बाद भी समाज के काम आने की प्रेरणा दी।

स्वर्गीय रमेशचंद जैन की स्मृति में आयोजित रक्तदान शिविर में ग्रामवासियों एवं जैन समाज के लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए कुल 30 यूनिट रक्तदान किया। शिविर का शुभारंभ उनके सुपुत्र आशीष जैन एवं अमित जैन, पोती डॉ. आकांक्षा जैन तथा पोता शाश्वत जैन ने सर्वप्रथम रक्तदान करके किया। इसके बाद ग्रामवासियों और समाजजनों ने भी रक्तदान किया। शिविर में प्रत्येक रक्तदाता को पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के लिए एक पौधा तथा ज्ञान और संस्कारों के प्रसार के उद्देश्य से आलोक सेठी द्वारा लिखित पुस्तक 'पिता भगवान के रूप में' भेंट की गई। इस तरह रक्तदान के साथ पर्यावरण संरक्षण और साहित्य के प्रति जागरूकता का संदेश भी दिया गया।

देहदानी परिवार का अभिनंदन पत्र से सम्मानः इस अवसर पर सुनील जैन ईशान की ओर से देहदान के महान कार्य के लिए विशेष अभिनंदन पत्र तैयार करवाकर स्वर्गीय रमेशचंद जैन के सुपुत्र आशीष जैन एवं अमित जैन सहित परिवारजनों को भेंट किया गया। अभिनंदन पत्र के माध्यम से परिवार के त्याग, साहस और मानवता के प्रति समर्पण की सराहना की गई। परिवार के इस निर्णय को समाज के लिए अनुकरणीय बताया गया।

50 विद्यार्थियों को स्वेटर वितरित, अर्थ दान के साथ सम्पूर्ण ग्रामवासियों के लिए अन्नदानः सेवा गतिविधियों की श्रृंखला में सुनील जैन ईशान एवं दीपक जैन बामंदी ने प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय लोनारा पहुंचकर ठंड को देखते हुए 50 विद्यार्थियों को स्वेटर वितरित किए। वहीं स्वर्गीय रमेशचंद जैन के परिवारजनों की ओर से ग्रामवासियों के लिए अन्नदान की व्यवस्था भी की गई। और विभिन्न संस्थाओं के लिए इक्यावन हजार रुपए का दान दिया।

डेढ़ घंटे चली श्रद्धांजलि सभा, वक्ताओं ने बताया लोनारा का इतिहास पुरुषः इस अवसर पर आयोजित शोक एवं श्रद्धांजलि सभा में संपूर्ण निमाड़ जैन समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों सहित ग्राम लोनारा के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। शोकसभा का संचालन वरिष्ठ समाजसेवी राजेंद्र जैन महावीर सनावद ने किया। उन्होंने स्वर्गीय रमेशचंद जैन के जीवन, व्यक्तित्व, सामाजिक सरोकारों, आत्मीय व्यवहार और परोपकार की भावना से जुड़े अनेक प्रसंग साझा किए। उन्होंने बताया कि रमेशचंद जैन का देहदान केवल एक व्यक्तिगत निर्णय नहीं, बल्कि समाज को मानव सेवा की नई दिशा देने वाला प्रेरक कदम है। सभा में पूर्व एयर मार्शल शशिकर चौधरी, सेवानिवृत्त पेंशनर संघ अध्यक्ष राधेश्याम पाटीदार, डॉ. आकांक्षा जैन, सुरभि जैन, मीना जैन लोनारा, इंजीनियर सुभाष जैन (इंदौर), ईशान जैन (सूरत), शिखर चंद जैन (लोनारा), जवाहरलाल जैन (महेश्वर), अजय शाह (बेड़िया), दीपक प्रधान (धामनोद), रमेशचंद जैन पंधाना, संदीप जैन (बामनदी), अशोक प्रधान, जितेंद्र जैन (खरगोन), भूपेंद्र जैन (महेश्वर), परिमल जैन कसरावद सहित अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके अतिरिक्त जिला पंचायत के पूर्व अध्यक्ष जगदीश पटेल, विधायक प्रतिनिधि नितिन पाटीदार, प्रशांत जैन, मोनू सनावद, पोरवाड़ सहायक फंड के अध्यक्ष राजमलजी, चौथमल जी खंडवा, अशोक मंडलोई बाबा, राधेश्याम पटेल लोनारा सहित अनेक गणमान्य नागरिकों ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किए। लगभग डेढ़ घंटे तक चली श्रद्धांजलि सभा में वक्ताओं ने स्वर्गीय रमेशचंद जैन के जीवन के विभिन्न प्रसंगों का स्मरण करते हुए उन्हें लोनारा ग्राम का इतिहास पुरुष बताया। वक्ताओं ने कहा कि रमेशचंद जैन ने देहदान के माध्यम से मृत्यु के बाद भी मानवता की सेवा का मार्ग चुना। उनके इस निर्णय से प्रेरित होकर उनके परिवारजनों और ग्रामवासियों का देहदान के लिए आगे आना उनके विचारों की सबसे बड़ी उपलब्धि है। जैन परिवार द्वारा गुर्जर धर्मशाला लोनारा में फोटो स्टैंड दान में दिया गया। इस प्रकार उनकी तेरहवीं का आयोजन केवल श्रद्धांजलि तक सीमित न रहकर देहदान जागरूकता, रक्तदान, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, अन्नदान और सामाजिक समरसता का प्रेरक अभियान बन गया। रमेशचंद जैन का देहदान अब एक व्यक्ति का निर्णय नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र में मानव सेवा की नई अलख जगाने वाला आंदोलन बनता दिखाई दे रहा है।

महासभा कार्यालय में श्रद्धा, भक्ति व आत्मीयता के साथ संपन्न हुआ दीपावली पूजन





दिल्ली। दीपावली के पावन एवं मंगलमय पर्व पर श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा कार्यालय, नई दिल्ली में श्रद्धा, भक्ति और आत्मीयता से परिपूर्ण वातावरण में दीपावली पूजन का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल जी, महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री एन. सी. जैन जी, महासभा के पदाधिकारी श्री पुनीत जैन जी एवं श्री स्वराज जैन जी सहित महासभा कार्यालय के समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने एक साथ विधि-विधान एवं भक्तिभाव के साथ दीपावली पूजन कर मंगलमय भविष्य की कामना की।

पूजन के दौरान सभी ने भगवान महावीर स्वामी के चरणों में श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए महासभा की निरंतर प्रगति, संगठन की मजबूती, समाज में एकता, सद्भाव एवं समस्त विश्व के सुख, शांति और समृद्धि की मंगल भावना व्यक्त की। दीपावली के इस पावन अवसर पर सभी की सहभागिता ने कार्यालय के वातावरण को भक्तिमय, उल्लासपूर्ण एवं आत्मीय बना दिया। यह आयोजन मात्र एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि महासभा परिवार के आपसी प्रेम, विश्वास, पारिवारिक सौहार्द और संगठन के प्रति समर्पण की सुंदर अभिव्यक्ति बना। इस अवसर पर सभी ने मंगल भावना व्यक्त की कि भगवान महावीर स्वामी के अहिंसा, करुणा, अपरिग्रह एवं जियो और जीने दो के पावन संदेश से समाज और विश्व आलोकित हो। महासभा धर्म, समाज एवं मानव सेवा के क्षेत्र में निरंतर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करे तथा संगठन का परिवार प्रेम और एकता के सूत्र में सदैव बंधा रहे।

मड़देवरा की बेटी और असि. प्रोफेसर आस्था जैन को सांख्यिकी में मिली पीएचडी की उपाधि

रत्नेश जैन रागी, बकस्वाहा

बकस्वाहा। तहसील व विकासखण्ड बकस्वाहा अंतर्गत ग्राम मड़देवरा निवासी एवं वर्तमान में शासकीय महाविद्यालय (गवर्नमेंट कॉलेज), हरदा में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत आस्था जैन को डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर द्वारा सांख्यिकी (Statistics) विषय में पीएचडी (विद्यावाचस्पति) की उपाधि प्रदान की गई है। विश्वविद्यालय सागर द्वारा आयोजित अंतिम मौखिक परीक्षा (Viva-Voce) में उनके शोध कार्य की सराहना की गई, जिसके उपरांत उन्हें यह उपाधि प्रदान करने की अधिसूचना जारी की गई। आस्था जैन, ग्राम मडदेवरा निवासी स्मृति शेष स्वरूप चन्द्र जैन पीटीआई की नातिन तथा नैनागिर जैन स्कूल के प्राचार्य सुमति प्रकाश जैन एवं शिक्षिका श्रीमती रजनी जैन की सुपुत्री हैं। उन्होंने अपनी प्रारम्भिक एवं स्कूली शिक्षा जवाहर नवोदय विद्यालय से पूर्ण की। इसके पश्चात उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर और देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (DAVV), इंदौर से अध्ययन किया। अपनी निरंतर मेहनत, लगन और दृढ़ संकल्प के बल पर उन्होंने न केवल उच्च पद हासिल किया, बल्कि अब पीएचडी की उपाधि प्राप्त कर अपने परिवार और पूरे क्षेत्र का नाम रोशन किया है।



जैन गजट संवाददाता मनोज जैन नायक बने ऑल इंडिया जैन जर्नलिस्ट एसोसिएशन के मुरैना जिलाध्यक्ष

मुरैना। ऑल इंडिया जैन जर्नलिस्ट एसोसिएशन (आईजा) मध्य प्रदेश द्वारा पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता मनोज जैन नायक को मुरैना जिले का जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उनकी नियुक्ति राष्ट्रीय अध्यक्ष हार्दिक हुंडिया की सहमति एवं प्रदेश अध्यक्ष डॉ. प्रदीप बाफना के मार्गदर्शन में की गई है। संगठन के मध्य प्रदेश के अध्यक्ष डॉ. प्रदीप बाफना द्वारा जारी नियुक्ति पत्र के अनुसार मनोज जैन नायक का मनोनयन 10 नवंबर 2026 से 31 दिसंबर 2027 तक के लिए किया गया है। संगठन ने उनसे अपेक्षा व्यक्त की है कि वे आईजा की गतिविधियों को सक्रियता के साथ आगे बढ़ाते हुए संगठन के उद्देश्यों एवं विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने तथा जैन पत्रकारों को संगठित करने में प्रभावी भूमिका निभाएंगे।



समाज से विनम्र निवेदन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की जा रही धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की योजनाओं में दान देकर सहयोग प्रदान कीजिये।

संस्था को 12 I/80G (प्रमाण पत्र संख्या URN-AAHTS7154EF2025101) एवं CSR-1 (प्रमाण पत्र संख्या -SRN-N30616809) के तहत आयकर में छूट प्राप्त है।

संपर्क : मोबाइल/वाट्सअप - 9415008344, 9415108233, 7607921391, 7505102419

SHRI BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN MAHASABHA

ACCOUNT NO. - 2405000100033312 RTGS/IFSC/NEFT Code - PUNB0185600 PUNJAB NATIONAL BANK, RAJENDRA NAGAR, Lucknow Pin Code - 226004 (U.P.)

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. पढाई में सफलता नहीं मिल पा रही है काफी प्रयास कर चुका हूं - रूपेश जैन, इलाहाबाद

उत्तर - रूपेश जी, आप राहु की डबल दशा से गुजर रहे हैं। श्री नेमिनाथ जी का चालीसा पढ़ें व 180 माला का संकल्प लेकर फेरें।

प्रश्न 2. मेरी पुत्री का योग कब है? क्या कुडंली में कोई दोष है - एस. के होटपटी, हुबली

उत्तर - आपकी पुत्री मांगलिक है। तुलसी विवाह (कुरम विवाह) करायें, तुरन्त लाभ होगा।

प्रश्न 3. मेरा सिर भारी रहता है, याद भी नहीं रहता, क्रोध बहुत आता है, व्यापार की नहीं चलता - मान सिंह, उज्जैन (म. प्र.)

उत्तर - आपके लग्न में शनि, राहु विराजमान है, गोमेद रत्न धारण करें तथा शनिवार को काले उड़द दान करें, लाभ होगा।

प्रश्न 4. बेटे को सन्तान सुख कब प्राप्त होगा, 5 वर्ष शादी को हो चुके हैं - मंशा जैन, रामपुर

उत्तर - मंशा जी, बेटे-बहु दोनों को श्री भक्त ामर जी का 20 वां काव्य मंत्रित यंत्र के सामने 20 बार पढ़ने के लिये कहें, जल्द आपके आंगन में बच्चे की आवाज सुनाई देगी।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062, 6755078



वागड़ से पधारे 18 हजार दशा हूमड़ समाज के अध्यक्ष दिनेश जी खोड़निया ने गुरुदेव के चरणों में अर्पित की भावनाएं, वागड़ पधारने का किया निवेदन

शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

नेमी नगर जैन कॉलोनी, इंदौर। आचार्य श्री सुनीलसागरजी गुरुदेव के दर्शन हेतु वागड़ क्षेत्र से पधारे 18 हजार दशा हूमड़ समाज के अध्यक्ष श्री दिनेश जी खोड़निया ने गुरुदेव के श्रीचरणों में उपस्थित होकर विनय पूर्वक वागड़ क्षेत्र में पधारने का भावपूर्ण निवेदन किया। उन्होंने गुरुदेव के समक्ष वागड़ की समस्त समाज की भावनाएं व्यक्त करते हुए बताया कि गुरुदेव ने कभी सागवाड़ा में एक भव्य पावापुरी के निर्माण का जो स्वप्न देखा था, वह अब पूर्णता की ओर अग्रसर है। समाज की हार्दिक भावना है कि इस पावन कार्य की प्रतिष्ठा आचार्य श्री सुनीलसागर जी गुरुदेव के मंगल सान्निध्य में संपन्न हो। उन्होंने समस्त वागड़वासियों की ओर से गुरुदेव से मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया तथा आगामी 7 अक्टूबर 2027 को आयोजित होने वाले गुरुदेव के 50वें स्वर्णिम अवतरण दिवस को वागड़ की पावन धरा पर मनाने की भावना भी व्यक्त की। इस अवसर पर गुरुदेव ने प्रेरणादायी उद्बोधन देते हुए कहा कि ''सपने वे सफल नहीं होते, जो बंद आंखों से देखे जाते हैं, बल्कि सफलता उन सपनों को मिलती है, जिन्हें खुली आंखों से देखा जाता है और जिन्हें साकार करने के लिए निरंतर पुरुषार्थ किया जाता है।'' गुरुदेव ने आगे कहा कि जीवन में ऐसे सपने देखने चाहिए, जो केवल व्यक्ति गत उपलब्धियों तक सीमित न हों, बल्कि जैन धर्म की महिमा और गरिमा को बढ़ाने वाले हों। जैन धर्म के प्रचार-प्रसार, उसके विकास और समाज के आध्यात्मिक उत्थान के साथ-साथ आत्म कल्याण के लक्ष्य को लेकर भी स्वप्न देखने चाहिए। गुरुदेव के इन प्रेरणादायी वचनों ने उपस्थित जनसमुदाय को धर्म, समाज और आत्मकल्याण के लिए समर्पित भाव से कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की।

पाण्डिचेरी महिला महासभा द्वारा दीपावली पर उपहार दिए गए



श्रीमती अर्चना भरत कोठारी, पाण्डिचेरी

श्री जैन महिला महासभा द्वारा श्री महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर दीपावली के अवसर पर वृद्धाश्रम में जाकर सभी वृद्धों, माताओं, बहनों को जरूरत की सामग्री व मिठाई व ड्राई फ्रूट वितरित किए गए। अध्यक्षा पूनम जी कासलीवाल व उपाध्यक्षा अर्चना जी कोठारी के साथ इस अवसर पर महासभा की सभी सदस्यों ने आर्थिक सहयोग देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

DOLPHIN WATERPROOFING
25 वर्षों का विश्वास
आधुनिक टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें सीलन, लीकेज एवं गर्मी से राहत व बिजली के बिल में भारी बचत करें।
छत व दीवारों का बिना तोड़फोड़ के सीलन का निवारण
For Your New & Old Construction
RAJENDRA JAIN
Mo. 80036-14691
116/194, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur


भ. महावीर निर्वाणोत्सव पर पदमचंद पाटनी परिवार को मिला समाज गौरव सम्मान



शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

गुवाहाटी। भगवान महावीर के 2553वें निर्वाणोत्सव के पावन अवसर पर श्री दिगंबर जैन समाज (गुवाहाटी) ने समाज के वरिष्ठ श्रेष्ठी पदमचंद पाटनी एवं उनके परिवार को समाज के प्रति किए गए उल्लेखनीय योगदान के लिए 'समाज गौरव' की उपाधि से सम्मानित किया। फैंसी बाजार के एस रोड स्थित भगवान महावीर धर्मस्थल में आयोजित निर्वाणोत्सव समारोह में समाज के चेयरमैन महावीर प्रसाद छाबड़ा, अध्यक्ष महावीर जैन, मंत्री वीरेंद्र कु. सरावगी, उपाध्यक्ष ओमप्रकाश सेठी सहित समाज के अन्य पदाधिकारियों ने पाटनी परिवार का शाल, श्रीफल, पुष्पमाला एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया।

इस अवसर पर अध्यक्ष श्री जैन ने कहा कि पाटनी परिवार ने पिछले कई वर्षों से धर्म, मंदिर, शिक्षा, साधु-संतों की सेवा एवं समाज के जरूरतमंद परिवारों की सहायता में हमेशा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। सम्मान ग्रहण करने के बाद पदमचंद पाटनी ने कहा कि यह सम्मान केवल हमारे परिवार का नहीं, बल्कि पूरे जैन समाज का है। हम आगे भी तन-मन-धन से समाज और धर्म की सेवा में लगे रहेंगे। कार्यक्रम में सकल जैन समाज के सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित थे।


With best comliments from
Ashok Anuradha Pahariya
Assam knitwear, Guwahati (Assam)
(Manufacturer of Sweater, T Shirts, Track Suit etc and deals in all kinds of school uniform)]
Mobile No. 8761015224
Sohani Imphal (Manipur)
(A store of salwar suit, night wears, saris, bed sheets, blankets etc)
Mob. 8732804313

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसोसेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009
कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबाइल - 08290950000
प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
मोबाइल- 9840213132
राजेश बी. शाह
मोबाइल- 9076700000
महामंत्री
पवन जैन गोधा
मो. 9311198985
कोषाध्यक्ष
प्रकाश बोहरा
दिल्ली
सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com
सह सम्पादक (मानद)
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108
लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344
दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर प्रतिवर्ष अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500
'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

कुण्डलगिरी बड़े बाबा पर्वतराज की परिक्रमा मुनिसंघ के साथ श्रद्धालुओं ने उत्साह के साथ की

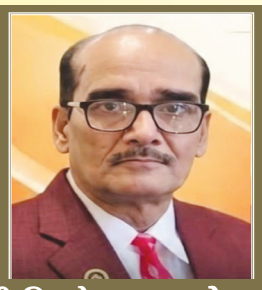
भगवान की आराधना और उपासना का प्रभाव इतना विलक्षण होता है कि साधक भी उनके समान श्रेष्ठ अवस्था प्राप्त करने की दिशा में बढ़ सकता है: निर्यापक श्रमण मुनिश्री समतासागर



कुण्डलपुर (म. प्र.)। दीपावली केवल घरों में दीपक जलाने और उत्सव मनाने का पर्व नहीं है, बल्कि अपने भीतर ज्ञान, विवेक और आत्मकल्याण का प्रकाश जगाने का महान अवसर है। जिस प्रकार बिना जला हुआ दीपक जलते हुए दीपक के संपर्क में आकर स्वयं प्रकाशमान हो जाता है, उसी प्रकार महापुरुषों और जिनेंद्र भगवान की आराधना एवं सानिध्य से साधारण आत्मा भी परमात्म पद प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हो सकती है। यह प्रेरणादायी उद्बोधन निर्यापक मुनि श्री समतासागर जी महाराज ने दिया। राष्ट्रीय प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी एवं कुण्डलपुर क्षेत्र प्रचारमंत्री जयकुमार जलज ने बताया कि कुण्डलपुर में विराजमान समस्त मुनिश्री संघ ने प्रथम बार संपूर्ण कुण्डलपुर बड़े बाबा पर्वतराज तीर्थक्षेत्र की परिक्रमा की उनके साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालु भक्तों ने लगभग 10 किलोमीटर पदयात्रा करते हुए उत्साह के साथ कुण्डलपुर पर्वतराज की परिक्रमा लगाई। सभी ने गुरुदेव के साथ भक्ति भावपूर्वक पर्वतराज की परिक्रमा वंदना करके अपने आपको धन्य समझा। भगवान महावीर स्वामी और उनके प्रथम गणधर इंद्रभूति गौतम जिनको आज के दिन कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई, वह जाति से एक असाटी ब्राह्मण थे उनके प्रसंग के माध्यम से दीपावली के वास्तविक आध्यात्मिक महत्व को समझाया। मुनि श्री ने कहा कि दीपक में तेल, घी और बत्ती सब कुछ मौजूद होता है, लेकिन जब तक वह प्रज्वलित नहीं होता, तब तक प्रकाश नहीं दे सकता। जैसे ही वह जलते हुए दीपक के संपर्क में आता है, स्वयं प्रकाश करने लगता है। इसी प्रकार मनुष्य के भीतर भी ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता विद्यमान है, लेकिन उसे जागृत करने के लिए संतों और महापुरुषों का सानिध्य आवश्यक है। भगवान महावीर रूपी प्रज्वलित दीपक के संपर्क में आने से इंद्रभूति गौतम का जीवन पूरी तरह बदल गया। भगवान महावीर के समवसरण में लाखों श्रावक-श्राविकाएं, हजारों मुनिराज, आर्यिकाएं और असंख्य जीव उपस्थित थे। इंद्रभूति गौतम अपने भाइयों अग्निभूति और वायुभूति के साथ भगवान के दर्शन करने पहुंचे। भगवान की वाणी और व्यक्तित्व का प्रभाव ऐसा हुआ कि उनके भीतर मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी कषायों का आवरण पिघलने लगा। भगवान के सानिध्य में पहुंचते ही उन्हें सम्यकदर्शन की प्राप्ति हुई। उन्होंने संसार के समस्त आकर्षणों को छोड़कर पंचमुष्टि केशलोंच के साथ मुनि दीक्षा धारण कर ली और प्रथम गणधर बने। उनके दोनों भाई भी भगवान के चरणों में पहुंचे और दीक्षित होकर गणधर बने। मुनिश्री ने कहा कि भगवान की आराधना और उपासना का प्रभाव इतना विलक्षण होता है कि साधारण साधक भी उनके समान श्रेष्ठ अवस्था प्राप्त करने की दिशा में बढ़ सकता है। अरिहंत और सिद्ध परमेष्ठियों की आराधना करने वाला साधक अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने का पुरुषार्थ करता है। इसे समझाने के लिए उन्होंने पारस पत्थर का उदाहरण दिया। सामान्य मान्यता है कि पारस पत्थर लोहे को सोना बना देता है, लेकिन एक पारस ऐसा भी होता है, जो सोने को भी पारस बना देता है। जिनेंद्र भगवान की सच्ची उपासना भी ऐसी ही है, जो साधक के जीवन को रूपांतरित कर देती है। भगवान महावीर सिद्ध परमेष्ठी बने और उनके प्रथम गणधर गौतम स्वामी ने केवलज्ञान प्राप्त कर अरिहंत पद प्राप्त किया। यह प्रसंग बताता है कि सच्चे भगवान का सानिध्य और उनकी वाणी आत्मा के विकास का सबसे बड़ा माध्यम है। महाराज श्री ने दीपावली की परंपरा का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए कहा कि भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक पर लड्डू चढ़ाए जाते हैं, जबकि गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त होने पर दीपक जलाकर उत्सव मनाया जाता है। भगवान महावीर के निर्वाण से सिद्धत्व की प्रेरणा मिलती है और गौतम स्वामी के केवलज्ञान से आत्मा में ज्ञान का प्रकाश जगाने का संदेश मिलता है। इसलिए दीपावली पर केवल बाहरी दीपक जलाना पर्याप्त नहीं है, अपने भीतर भी ज्ञान का दीपक प्रज्वलित करना चाहिए।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट के नवनियुक्त ट्रस्टी बनने पर आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

आपका यह नवीन दायित्व समाजसेवा, धर्मरक्षा एवं मानवीय मूल्यों के संरक्षण की दिशा में आपके अनुभव, निष्ठा और समर्पण से नई ऊर्जा एवं सकारात्मक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बने, ऐसी मंगलकामना है।


श्री किशोर कुमार जैन जी
बोंगाईगांव (असम)


श्री पवन कुमार जैन जी
पालम विहार, गुरूग्राम (हरियाणा)


श्री पुष्पेंद्र कुमार जैन सेठी जी
पालम विहार, गुरूग्राम (हरियाणा)


श्री अरूण जैन ठोलिया जी
पालम विहार, गुरूग्राम (हरियाणा)


श्री सुनील कुमार जैन
एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट (दिल्ली)

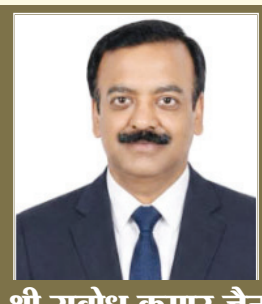

श्री दीपेश जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली


श्री मनोज जैन काला जी
गुवाहाटी (असम)


श्री अशोक कुमार जैन
(पाटनी) इम्फाल (मणिपुर)


श्री दिलीप कुमार जैन सेठी जी
ईटानगर (अरूणाचल प्रदेश)


डॉ. निर्मल कुमार जैन
(दिल्ली)


श्री सुबोध कुमार जैन
प्रीत विहार, (दिल्ली)


श्री एन. सी. जैन
मॉडल टॉउन (दिल्ली)

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
.....
.....
.....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।